चतुर्थ अध्याय

1. भट्टिकाव्यम् में प्रयुक्त तिङ्न्त क्रियापदों का संख्या निर्धारण एवं विभाग

प्रथमः सर्ग

अभून्नृपो .... स्वयम्।।1।।

1. **अभूत् – (भू + लुङ् < तिप्)।** 'भू' धातु से 'लुङ्'[1] सूत्र से लुङ् लकार।

2. **उपागमत्–(उप–गम् + लुङ < तिप्)।** 'उप' उपसर्गपूर्वक 'गम्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

सोऽध्यैष्ट .... न्यवधीदरींश्च।।2।।

3. **अध्यैष्ट**–(अधि–इङ् + लुङ् < त)। 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'इङ्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

4. **अयष्ट–(यज् + लुङ् < त)।** 'यज्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

5. **अपारीत्–(पृ + लुङ् < तिप्)।** 'पृ' धातु से 'लुङ.' सूत्र से लुङ् लकार।

6. **सममंस्त–(सम् – मन् + लुङ् < त)** 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'मन्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

7. **व्यजेष्ट–(वि–जि+लुङ् < त)।** 'वि' उपसर्गपूर्वक 'जि' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

8. **अरस्त – (रम् + लुङ् < त)।** रम् धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

9. **न्यवधीत्–(नि–हन् + लुङ् < तिप्)।** ' 'नि **उपसर्गपूर्वक** 'हन्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

वसुनि .... निरास्थत्।।3।।

10. **व्यकारीत्–(वि–कृ + लुङ् < तिप्)।** 'वि' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से 'लुङ.' सूत्र से लुङ् लकार।

11. **अध्यवात्सीत्–(अधि–वस् + लुङ् < तिप्)।** 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

12. **उपास्थित–(उप–स्था + लुङ् < त)।** 'उप' उपसर्गपूर्वक 'स्था' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

13. **निरास्थत्–(निर् – असु + लुङ् < तिप्)।** 'निर' उपसर्गपूर्वक 'असु' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

पुण्यो .... बह्निरभिप्रणीतः ।। 4 ।।

14. **जज्वाल-(ज्वल् + लिट् < तिप्)।** 'ज्वल्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[2] सूत्र से लिट् लकार।

स पुण्यकीर्तिः .... ब्रह्मभिरिद्धबोधैः ।। 5 ।।

15. **अध्यास्त-(अधि-आस् + लङ् < त)।** 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'आस्' धातु से 'अनद्यतने लङ्'[3] सूत्र से लङ् लकार।

अन्तर्निविष्टोज्ज्वलरत्नभासो .... गृहेभ्यः ।। 8 ।।

16. **भान्ति-(भा + लट् < झि)।** 'भा धातु से 'वर्तमाने लट्'[4] सूत्र से लट् लकार।

धर्म्यासु .... तिसृषूत्तमासु ।। 9 ।।

17. **अभिरेमे - (अभि-रम् + लिट् < त)।** 'अभि' उपसर्गपूर्वक 'रम्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

पुत्रीयता .... पुरमृष्यशृङ्ग ।। 10 ।।

18. **आनायि-(आङ्-नी + लुङ् < त)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'नी' धातु से 'लुङ्'[5] सूत्र से लुङ् लकार।

ऐहिष्टं .... कर्मसुताऽनुबन्धम् ।। 11 ।।

19. **ऐहिष्ट-(ईह + लुङ् < त)।** 'ईह' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

20. **व्यतानीत्-(वि-तन् + लुङ् < तिप्)।** 'वि' उपसर्गपूर्वक 'तन्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

रक्षांसि .... नृपतेरमार्गीत् ।। 12 ।।

21. **निरास्थत्-(निर - अस् + लुङ् < तिप्)।** 'निर्' उपसर्गपूर्वक 'अस्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

22. **अयाक्षीत्-(यज् + लुङ् < तिप्)।** 'यज्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

23. **अहौषीत्-(हु + लुङ् < तिप्)।** 'हु' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

24. **अमार्गीत्-(मार्ग + लुङ् < तिप्)।** 'मार्ग' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

निष्ठां .... सुपुत्रान् ।। 13 ।।

25. **प्राशुः-(प्र-अश् + लिट् < झि)।** 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'अश्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[6] सूत्र से लिट् लकार।

कौसल्ययाऽसावि .... लक्ष्मणेन ।। 14 ।।

26. **असावि-(सू + लुङ् < त)।** 'सू' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लङ् लकार।

27. **अभूत्-(भू + लुङ् < तिप्)।** 'भू' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

28. **प्रासोष्ट-(प्र-सू + लुङ् < त)** ‘प्र’ उपसर्गपूर्वक ‘सू’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

आर्चीद् .... वरिष्ठः ।। 15 ।।

29. **आर्चीत् – (अर्च + लुङ् < तिप्)।** ‘अर्च’ धातु से ‘लुङ्’[7] सूत्र से लुङ् लकार।

30. **न्यषेधीत् – (नि-षिध् < लुङ < तिप्)।** ‘नि’ उपसर्गपूर्वक ‘षिध्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

31. **उपानेष्ट – (उप-नी + लुङ् < त)।** ‘उप’ उपसर्गपूर्वक ‘नी’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

वेदोऽङ्गवांस्तैरखिलोऽध्यगायि .... गुणिनोऽध्यवात्सुः ।। 16 ।।

32. **अध्यगायि-(अधि-इङ् + लुङ् < त)।** ‘अधि’ उपसर्गपूर्वक ‘इङ्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

33. **उपायंसत – (उप-यम + लुङ् < झ)।** ‘उप’ उपसर्गपूर्वक ‘यम’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

34. **अध्यवात्सुः-(अधि – वस + लुङ् < झि)।** ‘अधि’ उपसर्गपूर्वक ‘वस्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

ततोऽभ्यगाद् .... मधुपर्कपाणिः ।। 17 ।।

35. **अभ्यगात्-(अभि-इण् + लुङ् < तिप्)।** ‘अभि’ उपसर्गपूर्वक ‘इण्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

36. **आर्जिहत्-(अर्ह + लुङ् < तिप्)।** ‘अर्ह’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

ऐषीः .... नृपस्तच्छिवमित्यवादीत ।। 18 ।।

37. **ऐषीः-(इष् + लुङ् < सिप्)।** ‘इष्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

38. **न्यवृतत्-(नि-वृत् + लुङ् < तिप्)** ‘नि’ उपसर्गपूर्वक ‘वृत्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

39. **अवादीत्-(वद + लुङ् < तिप्)।** ‘वद’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

40. **अबुद्धाः – (बुध् + लुङ् < सिप्)**–बुध् धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार

आख्यन्मुनिस्तस्यशिवं .... लक्ष्मणेन ।। 19 ।।

41. **आख्यत्-(आङ्-चक्ष < ख्यात्र + लुङ् < तिप्)।** ‘आङ्’ उपसर्गपूर्वक ‘चक्ष’ धातु से ‘लुङ्’[8] सूत्र से लुङ् लकार।

42. **तृणेढु-(तृह् + लोट् < तिप्)।** ‘तृह्’ धातु से ‘लोट् च’[9] सूत्र से लोट् लकार।

43. **विघ्नन्ति – (वि-हन् + लट < झि)**– ‘वि’ उपसर्गपूर्वक ‘हन्’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

स .... वचस्तापसकुञ्जरेण।। 20।।

44. **मुमोह-(मुह् + लिट् < तिप्)।** 'मुह्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[10] सूत्र से लिट् लकार।

45. **ऊचे-(ब्रु + लिट् < त)।** 'ब्रु' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

मया .... स्वसूनुम्।। 21।।

46. **आप्थाः (आप् + लुङ् < थास्)।** 'आप्' धातु से 'लुङ्'। सूत्र से लुङ् लकार।

47. **आप्स्महि (आप् + लुङ् < महिङ्)।** 'आप्' धातु से 'लुङ.' सूत्र से लुङ् लकार।

48. **मा कृथाः - (माङ् - कृ + लुङ् < थास्)।** 'माङ.' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'माङि लुङ्'[11] सूत्र से लुङ् लकार।

49. **प्रहिणु-(प्र-हि+लोट < सिप्)।** 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'हि' धातु से 'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार।

घानिष्यते .... भारमग्रयम्।। 22।।

50. **स्थायिष्यते (स्था+लृट् < त)।** 'स्था' धातु से 'लृट् शेषे च'[12] सूत्र से लृट् लकार।

51. **घानिष्यते-(हन् + लृट् < त)।** 'हन्' धातु से 'लृट् शेषे च' सूत्र से लृट् लकार।

52. **न्यस्यति-(नि-अस् + लट् < तिप्)।** 'नि' उपसर्गपूर्वक 'अस्' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

क्रुध्यन्कुलं .... सुतस्य।। 23।।

53. **धक्ष्यति-(दह् + लृट् < तिप्)।** 'दह्' धातु से 'लृट् शेषे च'[13] सूत्र से लृट् लकार।

54. **तप्स्यति-(तप् + लृट् < तिप्)।** 'तप्' धातु से 'लृट् शेषे च' सूत्र से लृट् लकार।

55. **अवालुलोचे-(अव-आङ्-लोच्+लिट्<त)।** 'अव' और 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'लोच्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[14] सूत्र से लिट् लकार।

56. **अनुजज्ञे-(अनु-ज्ञा + लिट् < त)।** 'अनु' उपसर्गपूर्वक 'ज्ञा' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

आशीर्भिरभ्यर्च्य .... कुमारः।। 24।।

57. **प्रतस्थे-(प्र-स्था + लिट् < त)।** 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'स्था' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

58. **इयाय-(इण् + लिट् < तिप्)।** 'इण्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

प्रयास्यतः .... लक्ष्मणोऽभूत।। 25।।

59. **अभूत्-(भू + लुङ् < तिप्)।** 'भू' धातु से 'लुङ्'[15] सूत्र से लुङ् लकार।

इषुमति .... रूदन्माङ्गलिक्यः।। 26।।

60. **मा रूदन्-(माङ् - रूद + लुङ् < झि)।** 'माङ्' उपपदपूर्वक 'रूद' धातु से 'माङि लुङ्'[16] सूत्र से लुङ् लकार।

अथ .... पक्षिणश्चाऽनुकूलाः।।27।।

61. **जगदुः-(गद् + लिट् < झि)। गद् धातु से** 'परोक्षे लिट्'[17] सूत्र से लिट् लकार।

62. **आजध्नुः-(आङ् - हन् + लिट् < झि)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक हन् धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

63. **पुस्फोर-(स्फुर् + लिट् < तिप्)।** 'स्फुर' धातु से 'परोक्षे लिट्'[18] सूत्र से लिट् लकार।

64. **चुकुवुः- (कु + लिट् < झि)।** 'कु' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

द्वितीय सर्ग

वनस्पतीनां .... ददर्श।।1।।

65. **ददर्श-(दृश् + लिट् < तिप्)।** 'दृश्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

तरङ्गसङ्गाच्चपलैः .... आकुलषट्पदानि।।2।।

66. **रेजुः - (राज् + लिट् < झि)।** 'राज्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

बिम्बागतैस्तीरवनैः .... स्थलपद्महासैः।।3।।

67. **तेनुः- (तन् + लिट् < झि)** 'तन' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

68. **उपारूरोद-(उप - रुद् + लिट < तिप्)-** 'उप' उपसर्गपूर्वक रुद् धातु से 'परोक्षे लिट' सूत्र से लिट् लकार।

वनानि .... लक्ष्मीमालोकयाञ्चक्रुरिवादरेण।।5।।

69. **आलोकयाञ्चक्रुः-(आङ. - लोच् - लिट् < झि)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'लोच्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

प्रभातवाताहतिकम्पिताकृतिः .... अन्यसङ्गमम्।।6।।

70. **संसहते-(सम्-सह + लट् < त)।** 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'सह' धातु से 'वर्तमाने लट्'[19] सूत्र से लट् लकार।

71. **निरास-(निर् - अस् + लिट् < तिप्)** 'निर्' उपसर्गपूर्वक 'अस्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

दत्तावधानं .... मृगावित्।।7।।

72. **दधे-(धा + लट् < इट्)।** 'धा' धातु से 'वर्तमाने लट्'[20] सूत्र से लट् लकार।

गिरेनितम्बे .... लक्ष्मीम्।।8।।

73. **अनुचकार-(अनु-कृ + लिट् < तिप्)।** 'अनु' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से 'परोक्षे लिट्'[21] सूत्र से लिट् लकार।

गर्जन् .... प्रतर्कयन्नन्यमृगेन्द्रनादान्।। 9।।

74. **बबन्ध-(बन्ध् + लिट् < तिप्) ।**'बन्ध्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

अदृक्षताऽम्भांसि .... अरविन्दव्यतिषङ्गवांश्च।। 10।।

75. **अदृक्षत-(दृश् + लुङ् < त)** 'दृश्' धातु से 'लुङ्'[22] सूत्र से लुङ् लकार।

76. **अश्रोषत्-(श्रु + लुङ् < तिप्)** कर्मवाच्य में 'श्रु' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

77. **आघ्रायि-(घ्रा + लुङ् < त)** 'घ्रा' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

लताऽनुपातं .... आस्त।। 11।।

78. **अगृह्णात्-(ग्रह + लङ् < तिप्)।** 'ग्रह' धातु से 'अनद्यतने लङ्'[23] सूत्र से लङ् लकार।

79. **उपास्पृशत् - (उप-स्पृश् + लङ् < तिप्)।** 'उप' उपसर्गपूर्वक 'स्पर्श' धातु से 'अनद्यतने लङ्' सूत्र से लङ् लकार।

80. **आस्त-(आस् + लङ् < त)।** 'आस्' धातु से 'अनद्यतने लङ्' सूत्र से लङ् लकार।

तिग्मांऽशु .... संभृतानि।। 12।।

81. **अपश्यत्-(दृश्+लङ्<तिप्)।** 'दृश्' धातु से 'अनद्यतने लङ्' सूत्र से लङ् लकार।

दिग्व्यापिनीः .... वितृणाऽन्तरालाः।। 13।।

82. **तुतोष-(तुष् + लिट् < तिप्)।** 'तुष्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[24] सूत्र से लिट् लकार।

वियोगदुःखाऽनुभवाऽनभिज्ञैः .... गोष्ठान्।। 14।।

83. **ऐक्षिष्ट-(ईक्ष् + लुङ् < त)।** 'ईक्ष' धातु से 'लुङ्'[25] सूत्र से लुङ् लकार।

स्त्रीभूषणं .... विलोक्य।। 15

84. **मुमुदे-(मुद् + लिट् < त)।** 'मुद्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

विवृत्तपार्श्वं .... गोपाऽङ्गनानृत्यमनन्दयत्तम्।। 16।।

85. **अनन्दयत्-(नन्द (णिच्) + लङ् < तिप्)।** 'नन्द' (टुनदि) धातु से 'अनद्यतने लङ्'[26] सूत्र से लङ्लकार।

विचित्रमुच्चैः .... मृगाणाम्।। 17।।

86. **ततान-(तन् + लिट् < तिप्)।** 'तन' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

सिताऽरविन्दप्रचयेषु .... श्रोत्रसुखैर्निनादैः।। 18।।

87. **प्रतीयिरे-(प्रति-इण् + लिट् < झ)।** 'प्रति' उपसर्गपूर्वक 'इण्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

न तज्जलं .... यन्मनः ।। 19 ।।

88. **जुगुञ्ज-(गुञ्ज् + लिट् < तिप्)।** 'गुञ्ज' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

89. **जहार-(हृञ् + लिट् < तिप्)।** 'हृञ्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

तं यायजूकाः .... जगदर्चनीयम् ।। 20 ।।

91. **प्राणर्चुः-(प्र-अर्च + लिट् < झि)।** 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'अर्च' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

विद्यामथैनं .... यातुधानान् ।। 21 ।।

92. **अध्यापिपत्-(अधि-इङ + लुङ् < तिप्)।** 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'इङ्' धातु से 'लुङ्'[27] सूत्र से लुङ् लकार।

आयोधने .... जागरुकः ।। 22 ।।

93. **ददौ-(दा + लिट् + तिप्)।** 'दा' धातु से 'परोक्षे लिट्'[28] सूत्र से लिट् लकार।

तं विप्रदर्शं .... रामः ।। 23 ।।

94. **डुढौके-(ढोक् + लिट् < त)।** 'ढौक्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

95. **निजधान-(नि-हन + लिट् < तिप्)।** 'नि' उपसर्गपूर्वक 'हन्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

अथाऽऽलुलोके .... शिञ्जम् ।। 24 ।।

96. **आलुलोके-(आङ् - लोक + लिट् < त)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'लोक्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

क्षुद्रान्न .... विलोलाः ।। 25 ।।

97. **जक्षुः - (अद् + लिट् < झि)।** 'अद्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

98. **विशश्वसे-(वि-श्वस् + लिट् < त)।** 'वि' उपसर्गपूर्वक 'श्वस्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

99. **चकाशिरे-(काश् + लिट् < झ)।** 'काश्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

अपूपुजन् .... क्षितिपालपुत्रौ ।। 26 ।।

100. **अपूपुजन्-(पूज् (णिच्) + लुङ् < झि)।** 'पूज' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

101. **प्रत्यग्रहीष्टाम्-(प्रति-ग्रह + लुङ् < तस्)।** 'प्रति' उपसर्गपूर्वक 'ग्रह' धातु से 'लुङ्'[29] सूत्र से लुङ् लकार।

दैत्याऽभिभूतस्य .... तपोधनैरित्थमभाषिषाताम् ।। 27 ।।

102. **अवोढम्-(वह् + लुङ् < थस्)।** 'वह' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

103. **अभाषिषाताम्-(भाष् + लुङ् < आताम्)।** ‘भाष्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

तान् .... नोऽरिसमिन्धनेषु।। 28।।

104. **प्रत्यवादी-(प्रति-वद् + लुङ् < तिप्)।** ‘प्रति’ उपसर्गपूर्वक ‘वद्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

105. **संघुक्ष्यताम्-(सम् - धुक्ष् + लोट् < आताम्)।** ‘सम’ उपसर्गपूर्वक ‘धुक्ष’ धातु से कर्मवाच्य में ‘लोट् च’[30] सूत्र से लोट् लकार।

प्रतुष्टुवः .... प्रसर्पत्।। 29।।

106. **प्रतुष्टुवुः (प्र - स्तु + लिट् < तस्)** ‘प्र’ उपसर्गपूर्वक ‘स्तु’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’[31] सूत्र से लिट् लकार।

आपिङ्गरूक्षोर्ध्वशिरस्यबालैः .... चाऽऽनशेऽब्दैः ।। 30।।

107. **आनशे-(अशु + लिट् < त)।** ‘अशु’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

अधिज्यचापः .... शुद्धेषुरमन्दकर्षी।। 31।।

108. **जघान-(हन् + लिट् < तिप्)।** ‘हन्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

गाधेयदिष्टं .... महार्थम् ।। 32।।

109. **जगाद-(गद् + लिट् < तिप्)।** ‘गद्’ धातु से ‘परोक्ष लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

आत्मम्भरिस्त्वं .... कस्मात्।। 33।।

110. **दयसे-(दय् + लट् < थास्)।** ‘दय्’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

111. **हंसि (हन् + लट् < सिप्)।** ‘हन्’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’[32] सूत्र से लट् लकार।

112. **व्रजन्ति (व्रज + लट् < झि)।** ‘व्रज’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

अघ्नो .... वेदवृत्ते।। 34।।

113. **निहन्मः - (नि - हन् + लट् < मस्)।** ‘नि’ उपसर्गपूर्वक ‘हन्’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

114. **अध्यकारिष्महि-(अधि-कृ + लुङ् < महिङ)।** ‘अधि’ उपसर्गपूर्वक ‘कृ’ धातु से कर्मवाच्य में ‘लुङ्’[33] सूत्र से लुङ् लकार।

115. **अद्मः (अद् + लट् < मस्)।** ‘अद्’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

116. **कुर्मः-(कृ + लट् < मस्)।** ‘कृ’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

धर्मोऽस्ति .... धृतकार्मुकेषुः।। 35।।

117. **व्यतिस्ते-(व्यति-अस् + लट् < त)।** ‘व्यति’ उपपदपूर्वक ‘अस्’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

118. **प्रणिहन्मि-(प्रनि-हन् + लट् < मिप्)।** 'प्रनि' उपपदपूर्वक 'हन्' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

119. **अस्ति (अस् + लट् < तिप्)।** 'अस्' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

इत्थं .... प्रधनान्निरास्थत्।। 36।।

120. **प्रचक्रतुः-(प्र-कृ + लिट् < तस्)।** 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से 'परोक्षे लिट्'[34] सूत्र से लिट् लकार।

121. **निरास्थत्-(निर-असु + लुङ् < तिप्)।** 'निर्' उपसर्गपूर्वक 'असु' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

जग्मुः .... मुनिना कुमारः।। 37।।

122. **जग्मुः-(गम् + लिट् < झि)।** 'गम्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

123. **बभूव-(भू + लिट् < तिप्)।** 'भू' धातु से 'परोक्षे लिट्'[35] सूत्र से लिट् लकार।

124. **ववृते-(वृत् + लिट् < त)।** 'वृत्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

125. **बभाषे-(भाष् + लिट् < त)।** 'भाष्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

महीय्यमाना .... न भूमिः।। 38।।

126. **हृणीयते-(हृणी + लट् < त)।** 'हृणी' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

बलिर्बबन्धे .... गुरूर्न तस्य।। 39।।

127. **बबन्धे-(बन्ध् + लिट् < तिप्)।** 'बन्ध्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से कर्मवाच्य में लिट् लकार।

128. **ममन्थे-(मन्थ् + लिट् < तिप्)।** 'मन्थ' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से कर्मवाच्य में लिट् लकार।

129. **विजिग्ये-(वि-जि+ लिट् < य)।** 'वि' उपसर्गपूर्वक 'जि' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से कर्मचाच्य में लिट् लकार।

130. **ऊहे-(वह् + लिट् < त)।** 'वह' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

इति ब्रुवाणो .... निजिधृक्षयिष्यन्।। 40।।

131. **आञ्जिहत्-(अहि + लुङ् < तिप्)।** 'अहि' धातु से 'लुङ्'[36] सूत्र से लुङ् लकार।

इतः स्म .... नसिहौ।। 41।।

132. **इतः स्म-(इण् + लट् < तस्)।** 'इण्' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

133. **औजिहताम्-(ऊह + लुङ् < तस्)।** 'ऊह' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

अजिग्रहत्तं .... रघुनन्दनस्तत् ।। 42।।

134. **अजिग्रहत्-(ग्रह (णिच्) + लुङ् < तिप्)।** 'ग्रह' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

135. **आर्दिदत-(अर्द + लुङ् < त)।** 'अर्द' धातु से 'लुङ्'[37] सूत्र से लुङ् लकार।

136. **अभाङ्क्षीत्-(भञ्ज् + लुङ् < तिप्)।** 'भञ्ज्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ. लकार।

ततो .... मैथिलमर्त्यमुख्यः ।। 43 ।।

137. **व्यसर्जयत्-(वि-सर्ज (णिच्) + लङ् < तिप्)।** 'वि' उपसर्गपूर्वक 'सर्ज' धातु से 'अनद्यतने लङ्'[38] सूत्र से लङ् लकार।

क्षिप्रं .... मिथिलामगच्छत् ।। 44 ।।

138. **अगच्छत्-(गम् + लङ् < तिप्)।** 'गम्' धातु से 'अनद्यतने लङ्' सूत्र से लङ् लकार।

वृन्दिष्ठं .... वरिष्ठम् ।। 45 ।।

139. **आर्चीत्-(अर्च् + लुङ् < तिप्)।** 'अर्च' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

त्रिवर्गपारीणमसौ .... बभाषे ।। 46 ।।

140. **अगात्-(इण् + लुङ् < तिप्)।** 'इण्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

141. **बभाषे-(भाष् + लिट् < त)।** 'भाष्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[39] सूत्र से लिट् लकार।

हिरण्मयी .... मैथिली ।। 47 ।।

142. **ददे-(दा + लिट् < त)।** 'दा' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

लब्ध्वां .... रघुवर्ग्यलक्ष्मीम् ।। 48 ।।

143. **उदवोढ-(उत् - वह + लुङ् < त)।** 'उत्' उपपदपूर्वक 'वह' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

सुप्रातम् .... बलमध्वनीनम् ।। 49 ।।

144. **अगात्-(इण + लुङ् < तिप्)।** 'इण्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

विशङ्कटो .... जामदग्न्यः ।। 50 ।।

145. **ऐति स्म-(आङ् - इण् + लट् < तिप्)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'इण्' धातु से 'वर्तमाने लट्'[40] सूत्र से लट् लकार।

उच्चैरसौ .... क्षितीन्द्रोऽनुनिनीषुरुचे ।। 51 ।।

146. **आह्वत-(आङ्-ह्वेञ् + लुङ् < त)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'ह्वेञ्' धातु से 'लुङ्'[41] सूत्र से लुङ् लकार।

147. **कुरू-(कृ + लोट् < सिप्)।** 'कृ' धातु से 'लोट् च'[42] सूत्र से लोट् लकार।

148. **मा अतियासीः-(माङ्-अति-या + लुङ् < तिप्)।** 'माङ्' उपपदपूर्वक तथा 'अति' उपपदपूर्वक 'या' धातु से 'माङि लुङ्'[43] सूत्र से लुङ् लकार।

149. **ऊचे-(ब्रू + लिट् < त)।** 'ब्रू' धातु से 'परोक्षे लिट्'[44] सूत्र से लिट् लकार।

अनेकशो .... राम! रामे ।। 52 ।।

150. **अताप्सीः-(तृप् + लुङ < सिप्)।** 'तृप्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

अजीगणद्दाशरथं .... तस्य।।53।।

151. **अजीगणत् – (गण् + लुङ् < तिप्)।** 'गण्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

152. **व्यकार्क्षीत्-(वि-कृष् + लुङ् < तिप्)।** 'वि' उपसर्गपूर्वक 'कृष्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ्लकार।

153. **अलावीत्-(लूञ्+ लुङ् < तिप्)।** 'लूञ्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

जिते .... मार्गान्।।54।।

154. **जगाहिरे-(गाह + लिट् < झ)।** 'गाह' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

अथ .... तूर्णमायादयोध्याम्।।55।।

155. **आयात्-(आङ्-या + लङ् < तिप्)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'या' धातु से 'अनद्यतने लङ्'[45] सूत्र से लङ् लकार।

तृतीय सर्ग

वधेन .... नाऽसीत्।।1।।

156. **आसीत्-(अस् + लङ् < तिप्)।** 'अस्' धातु से 'अनद्यतने लङ्'[46] सूत्र से लङ् लकार।

ततः .... सुमनीचकार।।2।।

157. **सुमनीचकार-(सुमनस्-कृ + लिट् < तिप्)।** 'सुमनस्' (च्वि) उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'परोक्षे लिट्'[47] सूत्र से लिट् लकार।

आदीक्षत् .... महार्धरत्नम्।।3।।

158. **आदिक्षत्-(आङ्-दिश् + लुङ् < तिप्)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'दिश्' धातु से 'लुङ्'[48] सूत्र से लुङ् लकार।

प्रास्थापयत् .... तीर्थजलाऽर्थमाशु।।4।।

159. **प्रास्थापयत्-(प्र-स्थापि (णिच्) + लङ् < तिप्)।** 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'स्थापि' णिजन्त धातु से 'अनद्यतने लङ्' सूत्र से लङ् लकार।

उक्षाम्प्रचक्रुः .... नियुक्ताः।।5।।

160. **चकरूः-(कृ + लिट् < झि)।** 'कृ' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

161. **बबन्धुः (बन्ध् + लिट् < झि)।** 'बन्ध्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

162. **मुमुचुः (मुच् + लिट् < झि)।** 'मुच्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

मातामहां .... वनप्रयाणम्।।6।।

163. **ववार-(वृञ् + लिट् < तिप्)।** 'वृञ्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[49] सूत्र से लिट् लकार।

कर्णेजपैः .... सनरेन्द्रमृत्युम्।।7।।

164. **व्यमृशत्-(वि-मृश् + लङ् < तिप्)।** ‘वि’ उपसर्गपूर्वक ‘मृश्’ धातु से ‘अनद्यतने लङ.’[50] सूत्र से लङ् लकार।

वसुनि .... निचख्ने।। 8 ।।

165. **अवजज्ञे-(अव-ज्ञा+ लिट् < त)।** ‘अव’ उपसर्गपूर्वक ‘ज्ञा’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

166. **निचख्ने-(नि-खन + लिट् < त)।** ‘नि’ उपसर्गपूर्वक ‘खन्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

ततः .... शोचन्।। 9 ।।

167. **आदिक्षत्-(आङ् - दिश् + लुङ् < तिप्)।** ‘आङ्’ उपसर्गपूर्वक ‘दिश्’ धातु से ‘लुङ्’[51] सूत्र से लुङ् लकार।

केचित् .... जगाद।। 10 ।।

168. **निनिन्दुः-(निन्द + लिट् < झि)।** ‘निन्द’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

169. **विचुक्रुशुः-(वि-क्रुश् + लिट् < झि)।** ‘वि’ उपसर्गपूर्वक ‘क्रुश्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

170. **ऊचुः-(ब्रु + लिट् < झि)।** ‘ब्रू’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

171. **जगाद-(गद् + लिट् < तिप्)।** ‘गद्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

गतो वनं .... मनांसि ।। 11 ।।

172. **भविता-(भू + लुट् + तिप्)।** ‘भू’ धातु से ‘अनद्यतने लुट्’[52] सूत्र से लुट् लकार।

173. **देहे-(दह् + लिट् < त)।** ‘दह’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’[53] सूत्र से कर्मवाच्य में लिट् लकार।

प्रस्थास्यमानावुपसेदुषस्तौ .... कृताऽर्थान्।। 12 ।।

174. **ऊचतुः - (ब्रू + लिट् < तस्) ।** ‘ब्रू’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

असृष्ट .... मोक्षः ।। 13 ।।

175. **असृष्ट-(सृज् + लुङ् < त)** ‘सृज्’ धातु से ‘लुङ्’[54] सूत्र से लुङ् लकार।

176. **अस्ति-(अस् + लट् < तिप्)** ‘अस्’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’[55] सूत्र से लट् लकार।

177. **अपुषत् (पुष् + लङ् < तिप्)।** ‘पुष्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

पौरा .... सूतम्।। 15 ।।

178. **निवर्तध्वम्-(नि-वृत् + लोट् < ध्वम्)।** ‘नि’ उपसर्गपूर्वक ‘वृत’ धातु से ‘लोट् च’[56] सूत्र से लोट् लकार।

179. **भवेत्–(भू + विधिलिङ् < तिप्)।** ‘भू’ धातु से ‘विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाऽधीष्ट–सम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्’[57] । सूत्र से लिङ् लकार।

180. **न्यगादीत्–(नि–गद < लुङ् < तिप्)।** ‘नि’ उपसर्गपूर्वक ‘गद्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

ज्ञात्वेङ्गितै .... रामः ।। 16 ।।

181. **अपजगाम–(अप–गम् + लिट् < तिप्)।** ‘अप’ उपपदपूर्वक ‘गम्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

अस्त्राक्षुरस्त्रं .... न्यवृतन्मनोभिः ।। 17 ।।

182. **अस्त्राक्षुः–(सृज् + लुङ् < झि)।** ‘सृज्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

सूतोऽपि .... पुरमाविवेश ।। 18 ।।

183. **आविवेश–(आङ् – विश् + लिट् < तिप्)।** ‘आङ्’ उपसर्गपूर्वक ‘विश्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’[58] सूत्र से लिट् लकार।

विलोक्य .... वस्त्रे ।। 20 ।।

184. **अच्योष्ट–(च्युङ् + लुङ् < त)।** ‘च्युङ्’ धातु से ‘लुङ्’[59] सूत्र से लुङ् लकार।

185. **ऐषीत्–(इष् + लुङ् < तिप्)।** ‘इष्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

186. **व्यलिपत्–(लिप् + लुङ् < तिप्)** ।‘लिप्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

187. **व्यवसिष्ट–(वि–वस् + लुङ् < त)।** ‘वि’ उपसर्गपूर्वक ‘वस्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

आसिष्ट .... द्युनिवासभूयम् ।। 21 ।।

188. **आसिष्ट–(आस् + लुङ् < त)।** ‘आस्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

189. **व्यरंसीत्–(वि–रम् + लुङ् < तिप्)।** ‘वि’ उपसर्गपूर्वक ‘रम्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

190. **अगात्–(इण् + लुङ् < तिप्)।** ‘इण्’ धातु से ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

विचुक्रुशुर्भूमिपतेर्महिष्यः .... चैव ।। 22 ।।

191. **विचुक्रुशुः–(वि–क्रुश् + लिट् < झि)।** ‘वि’ उपसर्गपूर्वक ‘क्रुश्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’[60] सूत्र से लिट् लकार।

192. **लुलुञ्चुः–(लुञ्च् + लिट् < झि)।** ‘लुञ्च’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

193. **जघ्नुः–(हन् + लिट् < झि)।** ‘हन्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

194. **उन्मुमुचुः–(उद्–मुच् + लिट् < झि)।** ‘उद्’ उपसर्गपूर्वक ‘मुच्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

195. **पेतुः–(पत् + लिट् < झि)।** ‘पत्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’[61] सूत्र से लिट् लकार।

196. **बभञ्जिरे-(भञ्ज् + लिट् < झ)।** 'भञ्ज्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

ताः सान्त्वयन्ती .... यूनः ।। 23 ।।

197. **न्यक्षिपत्-(नि-क्षिप् + लुङ् < तिप्)।** 'नि' उपसर्गपूर्वक 'क्षिप्' धातु से 'लुङ्'[62] सूत्र से लुङ् लकार।

198. **प्रास्थापयत्-(प्र-स्था (णिच्) + लुङ् < तिप्)।** 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'स्था' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

सुप्तो .... भरतोऽपि राज्ञाः ।। 24 ।।

199. **निरीक्षाञ्चक्रे -(निर्-ईक्ष् + लिट् < त)।** 'निर' उपसर्गपूर्वक 'ईक्ष्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

200. **आख्यत्-(आङ्-चक्ष् < ख्याञ् + लुङ् < तिप्)** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'ख्या' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

अशिश्रतवन्नात्ययिकं .... गुरूणाम् ।। 25 ।।

201. **आहिष्ट-(अहि + लुङ् < त)।** 'अहि' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

बन्धूनशङ्किष्ट .... अरासिषुश्च ।। 26 ।।

202. **अयासिषुः - (या + लुङ् < झि)।** 'या' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

203. **अरासिषुः-(रस् + लुङ् < झि)।** 'रस' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

स प्रोषिवानेत्य .... पणाऽऽयान् ।। 27 ।।

204. **शुश्राव-(श्रु + लिट् < तिप्)।** 'श्रु' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

205. **उपलेभे-(उप-लभ् + लिट् < त)।** 'उप्' उपसर्गपूर्वक 'लभ्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

चक्रन्दुः .... प्रतिपूर्णमन्यां ।। 26 ।।

206. **चक्रन्दुः-(क्रन्द् + लिट् < झि)।** 'क्रन्द्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[63] सूत्र से लिट् लकार।

दिदृशमाणः .... वृत्तमस्मै ।। 29 ।।

207. **ऐक्षत-(ईक्ष् + लङ् < त)।** 'ईक्ष्' धातु से 'अनद्यतने लङ्'[64] सूत्र से लङ् लकार।

208. **अपृच्छत्-(प्रच्छ + लङ् < तिप्)।** 'प्रच्छ' धातु से 'अनद्यतने लङ्' सूत्र से लङ् लकार।

आबद्धभीम .... न्यमाङ्क्षीत् ।। 30 ।।

209. **उपालब्ध-(उप-आङ् + लभ् + लुङ् < त)।** 'उप' और 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'लभ्' धातु से 'लुङ्'[65] सूत्र से लुङ् लकार।

210. **न्यमाङ्क्षीत्-(नि-मस्ज् + लुङ् < तिप्)।** 'नि' उपसर्गपूर्वक 'मस्ज्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

नृपात्मजौ .... बह्वनर्थम्।। 31।।

211. **चिक्लीशतुः-(क्लिश + लिट् < तस्)।** 'क्लिश्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

212. **ममार-(मृ + लिट् < त)।** 'मृ' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

नैतन्मत्तं .... रोरूदावान्।। 32।।

213. **अशप्यत् - (शप् + लुङ् < तिप्)।** 'शप्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

तं सुस्थयन्तः .... अध्वरपात्रजातम्।। 33।।

214. **समुदूहुः-(सम्-उद-वह + लिट् < झि)।** 'सम्' और 'उद्' उपसर्गपूर्वक 'वह्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

श्रोत्राक्षिनासावदनं .... चिताग्निम्।। 35।।

215. **जुहाव-(हु + लिट् < तिप्)।** 'हु' धातु से 'परोक्षे लिट्'[66] सूत्र से लिट् लकार।

कृतेषु .... सपौरः।। 36।।

216. **प्रायात्-(प्र-या + लुङ < तिप्)।** 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'या' धातु से 'अनद्यतने लङ्'[67] सूत्र से लङ् लकार।

शीघ्रायमाणैः .... रथाऽश्वामित्रै।। 37।।

217. **चकासाञ्चकार-(चकास् + लिट् < तिप्)।** 'चकास्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

उच्चिक्यिरे .... विशश्रमुश्च।। 38।।

218. **उच्चिक्यिरे-(उत्-चि + लिट् < झ)।** 'उत्' उपसर्गपूर्वक 'चि' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

219. **सस्नुः-(स्ना + लिट् < झि)।** 'स्ना' धातु स 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

220. **पिप्रियुः-(प्री + लिट् < झि)।** 'प्री' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

221. **आरेटुः-(आङ् - रट् + लिट् < झि)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'रट्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

222. **विशश्रमुः-(वि-श्रम् + लिट् < झि)।** 'वि' उपसर्गपूर्वक श्रम् धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

सम्प्राप्य .... श्रमवृत्तमस्ते।। 39।।

223. **ययुः-(या + लिट् < झि)।** 'या' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

ईयुः .... पयोभिः।। 40।।

224. **ईयुः-(इण् + लिट् < झि)।**‘इण्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

225. **विशश्राम-(वि-श्रम् + लिट् < तिप्)।** ‘वि’ उपसर्गपूर्वक ‘श्रम्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

226. **व्यासन्-(वि-असु + लङ < झि)।** ‘वि’ उपसर्गपूर्वक ‘असु’ धातु से ‘अनद्यतने लङ्’[68] सूत्र से लङ् लकार।

वाचंयमान् .... सशिष्यम्।। 41।।

227. **प्रणेमुः-(प्र-नम् + लिट् < झि)।** ‘प्र’ उपसर्गपूर्वक ‘नम्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’[69] सूत्र से लिट् लकार।

आतिथ्यमेभ्यः .... द्राघिमवन्त्युदूहुः।। 42।।

228. **उदूहुः - (उद-वह + लिट् < झि)।** ‘उद्’ उपसर्गपूर्वक ‘वह’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

आज्ञां .... तस्मिन् ।। 43।।

229. **प्रतीषुः-(प्रति-इष् + लिट् < झि)।** ‘प्रति’ उपसर्गपूर्वक ‘इष्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

230. **उपास्थुः-(उप-स्था + लुङ् < झि)।** ‘उप’ उपसर्गपूर्वक ‘स्था’ धातु से ‘लुङ’[70] सूत्र से लुङ् लकार।

231. **जगुः-(गै + लिट् < झि)।**‘गै’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

232. **ननृतुः-(नृत् + लिट् < झि)।**‘नृत्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

233. **नेमुः-(नम् + लिट् < झि)।**‘नम्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

234. **ऊचुः-(ब्रू + लिट् < झि)।**‘ब्रू’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

वस्त्राऽन्नपानं .... पिबताऽत्तशेध्वम्।। 44।।

235. **अत्त-(अद् + लोट् < थ)।**‘अद्’ धातु से ‘लोट् च’[71] सूत्र से लोट् लकार।

236. **शेध्वम्-(शीङ् + लोट् + ध्वम्)।**‘शीङ्’ धातु से ‘लोट् च’ सूत्र से लोट् लकार।

237. **पिबत- (पा < पिब + लोट् < थ)।**‘पा’ धातु से ‘लोट् च’ सूत्र से लोट् लकार।

238. **निवद्ध्वम् - (नि - वस् + लोट < ध्वम्)।**‘नि’ उपसर्गपूर्वक ‘वस्’ धातु से ‘लोट् च’[72] सूत्र से लोट् लकार।

239. **आद्ध्वम् - (आस् + लोट् < ध्वम्)।** आस् धातु से ‘लोट च सूत्र से लोट् लकार।’

ते भुक्तवन्तः .... समीयुः।। 45।।

240. **समीपयुः-(सम-इण् + लिट् < झि)।** 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'इण्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[73] सूत्र से लिट् लकार।

वैखानसेभ्यः .... चित्रकूटम्।। 46।।

241. **आनहिरे – (अहि + लिट् + झ)।** 'अहि' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

शुक्लोत्तरा .... स्ववर्ग्यान्।। 48।।

242. **औहिष्ट-(ऊह् + लुङ् < त)।** 'ऊह्' धातु से 'लुङ्'[74] सूत्र से लुङ् लकार।

समूलकाषं .... रामवियोगशोकात्।। 49।।

243. **चकषुः-(कष् + लिट् < झि)।** 'कष्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

अरण्ययाने .... कनीयान्।। 51।।

244. **प्रायुङ्क्त-(प्र + युजिर् + लुङ् < त)।** 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'युजिर्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

कृती श्रुती .... पुत्रकाम्या।। 52।।

245. **स्यात्-(अस् + विधिलिङ्ग < तिप्)।** 'अस्' धातु से 'विधिनिमन्णामन्त्रणा-ऽधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्'[75] सूत्र से विधिलिङ्ग लकार।

अस्माक मुक्तं .... पृथ्वीम्।। 53।।

246. **ईशिषे-(ईश् + लिट < त)।** 'ईश्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[76] सूत्र से लिट् लकार।

247. **जिह्रेषि-(ह्री + लट् < सिप्)।** 'ह्री' धातु से 'वर्तमाने लट्'[77] सूत्र से लट् लकार।

248. **जहीहि-(ओहाक् + लोट् < सिप्)।** 'ओहाक्' धातु से 'लोट् च'[78] सूत्र से लोट लकार।

249. **शाधि – (शास् + लोट् < सिप्)** 'शास्' धातु से 'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार।

इति .... अस्मन्मतेन।।56।।

250. **जगाद् – (गद् + लिट् < तिप्)** 'गद्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

चतुर्थ सर्ग

निवृत्ते .... ईयिवान्।। 1।।

251. **प्रपेदे-(प्र-पद् + लिट् < त)।** 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'पद' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

अटाटयमानः...................................... रक्षसा।। 2।।

252. **जह्रे-(हृ + लिट् < त)।** 'हृ' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

अवाक्शिरसमुत्पादं .... निचख्नतुः।। 3।।

253. **निचख्नतुः-(नि-खन् + लिट् < तस्)।** 'नि' उपसर्गपूर्वक 'खन्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

आंहिषातां .... शरणैषिणाम्।। 4।।

254. **आंहिषाताम्-(अहि + लुङ् < आताम्)।** 'अहि' धातु से 'लुङ्'[79] सूत्र से लुङ् लकार।

पुरो .... सुतीक्ष्णमुनिकेतनम्।। 5।।

255. **जुहवाञ्चकार – (हु + लिट् < त)।** 'हु' धातु से परोक्षे लिट्'[80] सूत्र से लिट् लकार।

यूयं .... गतिम्।। 6।।

256. **समैष्यथ – (सम् – आङ् – इण् + लृट् < थ)।** सम् और आङ् उपसर्गपूर्वक 'इण्' धातु से 'लृट् शेषे च'[81] सूत्र से लृट लकार।

257. **आसिष्महि-(आस् + लुङ् < महिङ्)।** 'आस्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

258. **स्थ-(अस् + लट् < थ)।** 'अस्' धातु से 'वर्तमाने लट्'[82] सूत्र से लट् लकार।

259. **यामः-(या + लट् < मस्)।** 'या' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

तस्मिन् .... आश्रमान्।। 7।।

260. **उवास-(वस् + लिट् < तिप्)।** 'वस्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[83] सूत्र से लिट् लकार।

ऋग्यजुषम् .... होमवान्।। 9।।

261. **बुभुजे-(भुज् + लिट् < त)।** 'भुज' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

हित्वा .... निर्भयः।। 11।।

262. **आनभ्र-(अभ्र + लिट् < तिप्)।** 'अीग्र' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

व्रातीनव्यालदीप्राऽस्त्रः .... नैकटिकाश्रमान्।। 12।।

263. **आट-(अट् + लिट् < तिप्)। अट् धातु स** 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

परेद्यव्यद्य .... प्रियम्भावुकतायगात्।। 13।।

264. **अगात्-(इण् + लुङ् < तिप्)।** 'इण्' धातु से 'लुङ्'[84] सूत्र से लुङ् लकार।

दूदृशे .... सौमित्रयेऽसकौ।।15।।

265. **ददृशे – (दृश् + लिट् < त)।** 'दृश' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से कर्मवाच्य में लिट् लकार।

तामुवाच .... किमभीरुरशर्यसे।। 21।

266. **उवाच – (ब्रू + लिट् < तिप्)।** 'ब्रू' धातु से 'परोक्ष लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

मानुषानभिलष्यन्ती .... कथमञ्चसि।। 22।

267. **अञ्चसि-(अञ्च् + लट् < सिप्)।** 'अञ्च्' धातु से 'वर्तमाने लट्'[85] सूत्र से लट् लकार।

बद्धा .... धतेऽन्यदुर्वहम्।। 26।।

268. **धत्ते-(धा + लट् < त)।** 'धा' धातु से 'वर्तमाने लट्'[86] सूत्र से लट् लकार।

ततो .... साऽऽदरं वचः।। 28।।

269. **न्यविक्षत-(नि-विश् + लुङ् < त)** 'नि' उपसर्गपूर्वक विश् धातु से 'लुङ्'[87] सूत्र से लुङ् लकार।

अस्त्रीकोऽसावहं .... मा मुचः।। 29।।

270. **अब्रवीत्-(ब्रू + लङ < तिप्)।** 'ब्रू' धातु से 'अनद्यतने लुङ'[88] सूत्र से लङ् लकार।

271. **व्रज – (व्रज + लोट् < सिप्)** 'व्रज' धातु से 'लोट् च'[89] सूत्र से लोट् लकार।

लक्ष्मणं सा .... पुनः।। 30।।

272. **अगमत्-(गम् + लुङ् < तिप्)।** 'गम्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

तस्याः .... मुखम्।। 31।।

273. **चकार-(कृ + लिट् < तिप्)।** 'कृ' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र स लिट् लकार।

अहं शूपर्णखा .... साऽब्रवीत्।। 38।।

274. **अब्रवीत् – पूर्ववत्**

पर्यशाप्सीद्दिविष्ठाऽसौ .... मुहुः।। 33।।

275. **पर्यशाप्सीत्-(परि-शप् + लुङ् < तिप्)।** 'परि' उपसर्गपूर्वक 'शप्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

खरदूषणयोभ्रात्रोः .... दण्डकारिण्यवासिनम्।। 34।।

276. **पर्यदेविष्टः-(परि-दिव् + लुङ् < थ)।** 'परि' उपसर्गपूर्वक 'दिव्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

कृते .... तयोः।। 35।।

277. **पश्यतम्-(दृश् + लोट् < थस्)।** 'दृश्' धातु से 'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार।

मम .... क्षमम्।। 36।।

278. **क्षमध्वम्-(क्षम् + लोट् < ध्वम्)।** 'क्षम्' धातु से 'लोट् च'[90] सूत्र से लोट लकार।

असंस्कृत्रिम .... माम्।। 37।।

279. **पर्यभूताम्-(परि-भू + लुङ् < तस्)।** 'परि' उपसर्गपूर्वक 'लुङ्'[91] सूत्र से लुङ्लकार।

श्वः .... मा रूदः।। 38।।

280. **अवाप्तासि-(अव-आप् + लुट् < सिप्)।** 'अव' उपसर्गपूर्वक 'अनद्यतने लुट्'[92] सूत्र से लुट् लकार।

281. **प्राणिवः-(प्र-अन् + लट् < वस्)** 'प्र' उपसर्गपूर्वक। 'अन्' धातु से 'वर्तमाने लट्'[93] सूत्र से लट् लकार।

282. **आश्वसिहि – (आङ् – श्वस् + लोट् < सिप्)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक – 'श्वस्' धातु से 'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार।

283. **प्रत्याभाणि – (प्रति – भण् + लुङ् < सिप्)** – 'प्रति' उपसर्गपूर्वक 'भण्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

284. **व्रज**– ('व्रज् + लोट् < सिप्') व्रज धातु से 'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार।

285. **मारुदः**– (मा–'रुद् + लुङ् < सिप्)' 'माङ्' उपपदपूर्वक 'माङि लुङ' से लुङ् लकार।

जक्षिमोऽनपराधेऽपि .... क्षमामहे।। 39।।

286. **जक्षिमः–(जक्ष् + लट् < मस्)।** 'जक्ष्' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

287. **क्षमामहे–(क्षम् + लट् < महिङ) = क्षम् धातु से कर्त्ता अर्थ में 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।**

तौ चतुर्दशसाहस्त्रबलौ .... अचितौ।। 40।।

288. **निर्ययतुः–(निर्–या + लिट् < तस्)।** 'निर्' उपसर्गपूर्वक 'या' धातु से 'परोक्षे लिट्'[94] सूत्र से लिट् लकार।

अथ सम्पततो .... मृधे।। 41।।

289. **अहताम्–(हन् + लङ् < तस्)।** 'हन्' धातु से 'अनद्यतने लङ्'[95] सूत्र से लङ् लकार।

तैः .... दीनैश्च मदिनी।। 42।।

290. **पप्रे–(प्रा + लिट् < त)।** 'प्रा' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

केचिद्द्वेपथुम .... केचन।।43।।

291. **आसेदुः – (आङ् – सद् + लिट् < झि)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'सद्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

मृगयुमिव .... पतत्रिराजम्।।44।।

292. **उपाययौ – (उप–आङ् + या + लिट् < तिप्)।** उप और आङ् उपसर्गपूर्वक 'या' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

शितविशिखनिकृत्तकृत्स्नवक्त्रः .... तुल्यः।। 45।।

293. **उपनिदधे–(उप–नि–धा + लिट् < त)।** 'उप' और 'नि' उपसर्गपूर्वक 'धा' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

पञ्चम सर्ग

निराकरिष्णू .... खरदूषणौ।। 1।।

294. **चेरतुः–(चर् + लिट् < तस्)।** 'चर्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

तौ .... रणे।। 2।।

295. **अकार्ष्टाम्–(डुकृञ् + लुङ् < तस्)।** 'डुकृञ्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

अथ .... यमसाच्चक्रतुर्द्विषौ।।3।।

296. **चक्रतुः-(डुकृञ् + लिट् < तस्)।** 'डुकृञ्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[96] सूत्र से लिट् लकार।

हतबन्धुर्जगामाऽसौ .... पतिम्।।4।।

297. **जगाम-(गम् + लिट् < तिप्)।** 'गम्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

सम्प्राप्य .... रावणाऽन्तिके।।5।।

298. **चक्रन्द-(क्रन्द + लिट् < तिप्)।** 'क्रन्द्' धातु से 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

299. **अरोदीत्-(रूद + लङ् < तिप्)।** 'रूद्' धातु से 'अनद्यतने लङ्'[97] सत्र से लङ् लकार।

दण्डकानध्यवातां .... भूमिवर्धनौ।।6।।

300. **अध्यवात्ताम् - (अधि - वस् + लुङ् < आताम्)।** 'अधि' उपसर्गपूर्वक वस् धातु से 'लुङ्'[98] सूत्र से 'लुङ् लकार'।

301. **अकृषाताम्-(डुकृञ् + लुङ् < आताम्)।** 'डुकृञ्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

विग्रहस्तव .... नयः।।7।।

302. **असि-(अस् + लट् < सिप्)।** 'अस्' धातु से 'वर्तमाने लट्'[99] सूत्र से लट् लकार।

यद्यहं .... प्रमाद्यश्चारदुर्बलः।।8।।

303. **आयास्यम्-(आङ् या + लृङ् < मिप्)।** आङ् उपसर्गपूर्वक 'या' धातु से 'लिङ्निर्मित्ते लृङ् क्रियापित्तौ'[100] सूत्र से लृङ् लकार।

304. **अज्ञास्यः-(ज्ञा + लृङ् < सिप्)।** 'ज्ञा' धातु से 'लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियाति पत्तौ' सूत्र से लृङ् लकार।

अध्वरेष्वग्निचित्वत्सु .... अधुना।।11।।

305. **अत्तु-(अद + लोट् < तिप्)।** 'अद्' धातु से 'लोट् च'[101] सूत्र से लोट् लकार।

306. **ऐति-(आङ्-इण् + लट् < तिप्)।** 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'इण्' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

आमिक्षीयं .... राक्षसाः।।12।।

307. **उपघ्नन्ति-(उप-हन् + लट् < झि)।** 'उप' उपसर्गपूर्वक 'हन्' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

युवजानिः .... शिलीमुखैः।।13।।

308. **हन्ति-(हन् + लट् < तिप्)।** 'हन्' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

मांसानि .... दिशः।।14।।

309. **अश्नन्ति-(अश् + लट् < झि)।** 'अश्' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

310. **बिभ्यति–(भी + लट् < झि)।** ‘भी’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

कुरू .... पुत्रपौत्रीणतां नय।। 15।।

311. **कुरू–(कृ + लोट् < सिप्)।** ‘कृ’ धातु से ‘लोट् च’ सूत्र से लोट् लकार।

312. **त्यज–(त्यज् + लोट < सिप्)।** ‘त्यज्’ धातु से ‘लोट् च’ सूत्र से लोट् लकार।

313. **नय–(नी + लोट् < सिप्)।** ‘नी’ धातु से ‘लोट् च’[102] सूत्र से लोट् लकार।

सहायवन्तः .... माश्वसीः।। 16।।

314. **आशासते–(आङ्–शास् + लट् < झ)।** ‘आङ्’ उपसर्गपूर्वक ‘शास्’ धात से ‘वर्तमाने लट्’[103] सूत्र से लट् लकार।

नाऽऽस्यं .... विहितेन्द्रियः।। 19।।

315. **पश्यति–(दृश् + लट् < तिप्)।** ‘दृश्’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

316. **निस्ते–(णिसि + लट् < त)।** ‘णिसि’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

न तं पश्यामि .... सुकृती भव।।21।।

317. **भवेत्**–(भू + विधिलिङ् < तिप्’)। भू धातु से ‘विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाऽ धीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्’[104] सूत्र से लिङ् लकार।

318. **पश्यामि (दृश् + लट् < मिप्)।** ‘दृश्’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’[105] सूत्र से लट् लकार।

319. **भव–(भू + लोट् < सिप्)।** ‘भू’ धातु से ‘लोट् च’[106] सूत्र से लोट् लकार।

प्रत्यूचे .... रावणो ह्यहम्।। 23।।

320. **प्रत्यूचे–(प्रति + ब्रू + लिट् < त)। प्रति उपसर्गपूर्वक** ‘ब्रू’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’[107] सूत्र से लिट् लकार।

321. **आश्वसिहि (आ + श्वस् + लोट < सिप्)।** ‘आङ्’ उपसर्गपूर्वक ‘श्वस्’ धातु से ‘लोट् च’ सूत्र से लोट् लकार। ‘रूदादिभ्यः सार्वधातुके’[108] सूत्र से इट् का आगम तथा सि को आदेश।

322. **बिभेषि (भी + लट् < सिप्)** ‘भी’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

323. **त्यज – (त्यज् + लोट् < सिप्)** ‘त्यज्’ धातु से ‘लोट् च’ सूत्र से लोट लकार।

मामुपास्त .... अनादरेक्षितः।। 24।।

324. **उपास्त – (उप + आस् + लङ् + त)** ‘उप’ उपसर्गपूर्वक आस् धातु से ‘अनद्यतने लङ्’[109] सूत्र से लङ् लकार।

325. **विरूग्णोदग्रधाराऽग्रः .... बली।। 25।।**

326. **मन्यसे–(मन् + लट् < थास्)** ‘मन्’ धातु से कर्त्ता अर्थ में ‘वर्तमाने लट्’ सूत्र से लट् लकार।

कृत्या .... तृणवदत्यजम्।। 26।।

327. **अत्यजम् – (त्यज् + लङ् < मिप्)** 'त्यज्' धातु से 'अनद्यतने लङ्' सूत्र से लङ् लकार।

आहोपुरुषिकां .... सदा।।27।।

328. **पश्य–(दृश् + लोट < सिप्)** 'दृश्' धात से 'लोट् च'[110] सूत्र से लोट् लकार

हृतरत्नः .... गोत्रभित्।।28।।

329. **अभ्येति–(अभि + इण् + लट् < तिप्)**– 'अभि' उपसर्गपूर्वक 'इण' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

अतुल्यमहसा .... तद्विनिग्रहे।।29।।

330. **यतिष्ये – (यत् + लृट् < त)।** 'यत्' धातु से 'लृट् शेषे च'[111] सूत्र से लृट् लकार।

उपत्य .... चक्रमे।।30।।

331. **चक्रमे–(क्रम् + लिट < त)** 'क्रम' धातु से आत्मनेपद में 'परोक्षे लिट्'[112] सूत्र से लिट् लकार।

संपत्य .... दशाननः ।।31।।

332. **अशिश्रवत् – (श्रु + णिच् + लुङ् < तिप्) ण्यन्त श्रु धातु से** 'लुङ्'[113] सूत्र से लुङ् लकार।

333. **अगादि–(गद् + लुङ् < तिप्)।** 'गद्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से कर्मवाच्य में लुङ् लकार।

अन्तर्धत्स्व .... दधद्नुः।।32।।

334. **अन्तर्धत्स्व–(अन्तर् – धा + लोट < थास्)** 'अन्तर्' उपपदपूर्वक 'धा' धातु से 'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार।

भवन्तं .... सार्वलौकिकम्।।33।।

335. **अचीकरत्–(कृ + णिच् + लुङ् + तिप्)** 'णिजन्त' कृ धातु से 'लुङ्'[114] सूत्र से लुङ् लकार।

336. **जिगाय–(जि + लिट् < तिप्)** 'जि' धातु से 'परोक्षे लिट्'[115] सूत्र से लिट् लकार।

यमाऽऽस्यदृश्वरी .... सिंहनर्दिना ।।34।।

337. **वेत्ति–(विद् + लट् < तिप्)** 'विद्' ज्ञाने धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

न त्वं........ चाऽन्वभविष्यहम्।।35।।

338. **अन्वभावि**– (अनु – भू + लुङ् < तिप्) 'अनु' उपसर्गपूर्वक भू धातु से कर्म में 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

339. **अन्वभविषि (अनु + भू + लुङ् < मिप्)**– 'अनु' उपसर्गपूर्वक भू धातु से कर्म अर्थ में 'लुङ्' सूत्र से 'लुङ्' लकार।

340. **अन्वभाविष्ठाः** (अनु + भू + लुङ् < सिप्) 'अनु' उपसर्गपूर्वक भू धातु से कर्म अर्थ में 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

अध्यङ् .... मखे धनुः ।।36।।

341. **अभनक्–(भञ्ज् + लङ् < तिप्)**– 'भञ्ज्' धातु से 'अनद्यतने लङ्'[116] सूत्र से लङ् लकार।

संवितः .... सः।।37।।

342. **अगोपीत् (गुप् + लुङ् < तिप्)**– 'गुप्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

सुखजातः .... बलिविग्रहम्।।38।।

343. **दीव्य (दिव् + लोट् + सिप्)**– 'दिव्' धातु से 'लोट् च'[117] सूत्र से लोट् लकार।

344. **मा आरब्धाः (आङ् – रभ् + लुङ् < सिप्)**– 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'रभ्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार।

तं......... किं ततः।।39।।

345. **प्रत्यभाषत (प्रति + भाष् + लङ्)** 'प्रति' उपसर्ग पूर्वक भाष् धातु से 'अनद्यतने लङ्'[118] सूत्र से लङ् लकार।

अघानि .... क्षुद्रमानसम् ।।40।।

346. **अघानि (हन् + लुङ् < तस्)** – 'हन्' धातु से कर्म अर्थ में 'लुङ्'[119] सूत्र से लुङ् लकार।

यद् गेहे .... न तत् ।।41।।

347. **अभाययत्–(भी + णिच् + लङ् < तिप्)** 'भी' धातु से णिजन्त में 'अनद्यतने लङ्' सूत्र से लङ् लकार।

वनतापसके .... खरदूषणौ ।।43।।

348. **मम्रतुः (मृ + लिट् < तस्)**– 'मृ' धातु से 'परोक्षे लिट्'[120] सूत्र से लिट् लकार।

त्वं तु भीरूः .... सदा ।।44।।

349. **अपह्नुषे–(अप + ह्नुङ् + लट् < त)**– 'अप्' उपसर्गपूर्वक (ह्नु) धातु से 'वर्तमाने लट्'[121] सूत्र से लट् लकार।

350. **स्तौषि–(स्तु + लट् < सिप्)**– 'स्तु' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

शीर्षच्छेद्यमतोऽहं .... वनौकसौ।।45।।

351. **करोमि–(कृ + लट् < मिप्)**– 'कृ' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

352. **करिष्यामि–(कृ + लृट् < मिप्)**– 'कृ' धातु से भविष्यत् काल में 'लृट् शेषे च'[122] सूत्र से लृट् लकार।

तमुद्यत .... भवामि ते ।।46।।

353. **भवामि (भू + लट् < मिप्)**– 'भू' धातु से वर्तमान काल में 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

354. **प्रत्युवाच–(प्रति – ब्रू + लिट् < तिप्)।** ‘प्रति’ उपसर्गपूर्वक ‘ब्रु’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’[123] सूत्र से लिट् लकार।

हरामि .... च सन्तनु ।।47।।

355. **हरामि–(हृ + लट् < मिप्)**– ‘हृ’ धातु से वर्तमान काल में ‘वर्तमाने लट्’[124] सूत्र से लट् लकार।

356. **सन्तनुः (सम् + तन् + लोट < सिप्)**– ‘सम्’ उपसर्गपूर्वक ‘तन्’ धातु से ‘लोट च’[125] सूत्र से लोट् लकार।

ततश्चित्रीयमाणः .... लोभयन् ।।48।।

357. **पुप्लुवे–(प्लु + लिट < त)**– ‘प्लुङ्’ धातु से परोक्षभूत काल में ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

योगक्षेमकरं .... गजविक्रमः ।।50।।

358. **जगाम–(गम् + लिट् < तिप्)**– ‘गम्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

स्थायं .... विसिष्मिये।।51।।

359. **विसिष्मिये (वि + स्मिङ् + लिट् < त)**– ‘वि’ उपसर्गपूर्वक ‘स्मिङ’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

चिरं .... क्षणदाचरम्।।52।।

360. **अव्यात्सीत् (व्यध् + लुङ् < तिप्)।** ‘व्यध्’ धातु से ‘लुङ्’[126] सूत्र से लुङ् लकार।

श्रुत्वा .... गन्तुमैजिहत् ।।53।।

361. **ऐजिहत्–(ईह् (णिच्) + लुङ् < तिप्)**– ‘ईह’ धातु से ण्यन्त भूतकाल में ‘लुङ्’ सूत्र से लुङ् लकार।

एष .... राघवम् ।।54।।

362. **विरौति–(वि + रु + लट् < तिप्)**– ‘वि’ उपसर्गपूर्वक ‘रु’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’[127] सूत्र से लट लकार।

363. **कुरु** – (कृ + लोट् < सिप्) ‘कृ’ धातु से ‘लोट् च’[128] सूत्र से लोट् लकार।

364. **त्रायस्व–(त्रा + लोट < थास् <)** ‘त्रा’ धातु से ‘लोट् च’ सूत्र से लोट् लकार।

रामसंघुषितं .... ताम् ।।55।।

365. **अवदत्–(वद् + लङ् < तिप्)**– ‘वद्’ धातु से ‘अनद्यतने लङ्’[129] सूत्र से लङ. लकार।

देहं ....मुमूर्षया ।।57।।

366. **आयात्–(आङ् + या + लुङ् < तिप्)**– ‘आङ्’ उपसर्ग पूर्वक ‘या’ धातु से ‘लुङ्’[130] सूत्र से लुङ् लकार।

शत्रून् .... पतिः ।।58।।

367. **विस्मापयेत (वि - स्मये < त)** 'वि' उपसर्गपूर्वक 'स्मये' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार। पुक् आगम।

368. **द्रक्ष्यते-(दृश् + लृट् < त)**-'दृश्' धातु से भविष्यकाल में कर्म में 'लृट शेषे च' सूत्र से लृट् लकार।

यायाः .... तया।।59।।

369. **यायाः - (या + विधिलिङ् < सिप्)** - 'या' धातु से 'विधिनिमन्त्रणा-मन्त्रणाऽधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्'[131] सूत्र से विधिलिङ् लकार।

370. **उत्सहसे (उद् - सह + लट् < तस्)** 'उद्' उपसर्गपूर्वक 'सह्' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

371. **जगदे (गद् + लिट < त) गद् धातु से कर्म अर्थ में** 'परोक्षे लिट्' सूत्र से लिट् लकार।

मृषोद्यं .... शपन्वशी ।।60।।

372. **यास्यसि (या + लृट् < तिस्)** 'या' धातु से भविष्यकाल में 'लृट शेषे च'[132] सूत्र से लृट् लकार।

373. **निरगात् (निर् - गम् + लुङ् < तिप्)** 'निर् उपसर्गपूर्वक' 'गम्' धातु से 'लुङ्'[133] सूत्र से लुङ् लकार।

सन्दिदर्शयिषुः .... सुखाभवः ।।64।।

374. **उचे (ब्रू + लिट < त)**- 'ब्रू' धातु से कर्म में 'परोक्षे लिट्'[134] सूत्र से लिट् लकार।

का त्वमेकाकिनी .... कथ नं वा ।।66।।

375. **अघसन् (अद् + लुङ् < झि)**। 'अद्' धातु से 'लुङ्' सूत्र से लुङ् लकार। लुङ् को 'घस्' आदेश।

हृदयङ्गममूर्तिः .... हेतुना।।67।।

376. **अभ्यैः (अभि - इण् + लङ् < सिप्)**- 'अभि' उपसर्गपूर्वक 'इण् गतौ' धातु से भूतकाल में 'अनद्यतने लङ्'[135] सूत्र से लङ् लकार।

377. **वद् (वद् + लोट् < सिप्)** 'वद्' धातु से 'लोट् च'[136] सूत्र से लोट लकार।

सुकृतं .... सुरतेषु कः ।।68।।

378. **उपतिष्ठते (उप + स्था + लट् (त)**। 'उप' उपसर्गपूर्वक 'स्था' धातु से 'वर्तमाने लट्'[137] सूत्र से लट् लकार।

अपीतमधुका .... मतिः ।।70।।

379. **असि (अस् + लट् < सिप्)**। अस् धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

मिथ्यैव .... श्रियः ।।71।।

380. **अभिमन्ये (अभि + मन् + लट् < इट्)**– 'अभि' उपसर्गपूर्वक मन् धातु से वर्तमान काल में 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

नोदकण्ठिष्यताऽत्यर्थं .... वसेत् ।।72।।

381. **ऐक्षिष्यत (ईक्ष् + लृङ् < त)।** 'ईक्ष्' धातु से 'लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियाऽतिपत्तौ'[138] सूत्र से लृङ् लकार।

382. **उदकण्ठिष्यत (उद् – कठ + लृङ् < त)।** 'उद्' उपसर्गपूर्वक 'कठि शोके' धातु से 'लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियाऽतिपत्तौ' सूत्र ले लृङ् लकार।

383. **वसेत् (वस्+ विधिलिङ् < तिप्)** 'वस्' धातु से सम्प्रश्न अर्थ में 'विधिनिमन्त्रणामन्त्रऽधीष्ट सम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्'[139] सूत्र से विधिलिङ् लकार।

वल्गूयन्तीं .... स्थाणुसमोऽपिते? ।।73।।

384. **मन्तूयति (मन्तु + लट् < तिप्)**– 'मन्तु' धातु से वर्तमान काल में 'वर्तमाने लट्'[140] सूत्र से लट् लकार।

कः पण्डितायमानः .... वनम् ।।75।।

385. **उवाच (ब्रू + लिट् < त)**– 'ब्' धातु से भूतकाल में 'परोक्षे लिट्'[141] सूत्र से लिट् लकार।

अध्वरेषु .... वनम् ।।79।।

386. **अभ्यागमत् (अभि – आङ् – गम् + लङ् < तिप्) अभि एवं आङ् उपसर्गपूर्वक** 'गम्' धातु से 'अनद्यतने लङ्'[142] सूत्र से लङ् लकार।

पतत्रिकोष्टुजुष्टानि .... शेरते ।।80।।

387. **शेरते (शी + रुट + लट् < त)**– 'शीङ्' धातु से वर्तमानकाल में 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

दीव्यमानं .... नाऽवगच्छसि।।81।।

388. **अवगच्छसि (अव + गम् + लट् < सिप्)**– 'अव' उपसर्गपूर्वक 'गम्' धातु से 'वर्तमाने लट्' से लट् लकार।

भ्रातरि .... वनम् ।।82।।

389. **यातः (या + लट् < तस्)।** 'या' धातु से 'वर्तमाने लट्'[143] सूत्र से लट् लकार।

अथ .... दशाननः ।।83।।

390. **अवादीत् (वद् + लुङ् + तिप्)** 'वद्' धातु से भूतकाल में 'लुङ्'[144] सूत्र से लुङ् लकार।

कृते .... राघवम् ? ।।84।।

391. **मन्येत-(मन् + विधिलिङ् < त)** 'मन' धातु से सम्प्रश्न अर्थ में विधि 'निमन्त्रणामन्त्राधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्'[145] सूत्र से विधिलिङ् लकार।

मत्पराक्रम .... हरिः ।।86।।

392. **दरिद्राति-(दरिद्रा + लट् < तिप्)**- 'दरिद्रा' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

निर्लङ्को .... कारणम्? ।।87।।

393. **अध्यास्ते-(अधि + आस् + लट् < त)**- 'अधि' उपसर्ग पूर्वक 'आस्' धातु से वर्तमान काल में 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

394. **अवैति-(अव + इण + लट् (तिप्)**- 'अव' उपसर्ग पूर्वक इण् धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

भिन्ननौक .... निरूद्यतिः ।।88।।

395. **आस्ते (आस् + लट् < त)**- 'आस्' धातु से 'वर्तमाने लट्' सूत्र से लट् लकार।

आवासे .... मया सह ।।90।।

396. **वस (वस् + लोट् < सिप्)**- 'वस्' धातु से 'लोट् च'[146] सूत्र से लोट लकार।

संगच्छ .... तमकिञ्चनम् ।।91।।

397. **संगच्छ (सम् + गम् + लोट < सिप्)**- 'सम्' उपसर्ग पूर्वक गम् धातु से 'लोट् च'[147] सूत्र से लोट् लकार।

398. **जहीहि-(ओहाक् + लोट < सिप्)**- 'दास', 'हा' धातु से 'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार

अश्वनीतपिबतीयन्ती .... वरमन्दिरे ।।92।।

399. **मोदस्व-(मुद् + लोट् < थास्)**-मुद् धातु से चाहिए अर्थ में 'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार।

मा स्म .... भव ।।93।।

400. **भव (भू धातु + लोट < सिप्)**- 'भू' धातु से 'लोट् च' सूत्र से लोट् लकार।

उच्चै .... वदन् ।।96।।

401. **प्राप (प्र + आप् + लिट < तिप्)**- 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'आप्' धातु से 'परोक्षे लिट्'[148] सूत्र से लिट् लकारः।

द्विषन् .... मम।।97।।

402. **मा भूः (माङ् - भू + लुङ् < सिप्)**। 'माङ्' उपपदपूर्वक 'भू' धातु से 'माङि लुङ्'[149] सूत्र से लुङ् लकार।

सतामरुषकरं .... खम् ।।100।।

403. **उत्पपात (उद् – पत् + लिट् < सिप्)**– ‘उद्’ उपसर्गपूर्वक ‘पत्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

धुन्वन् .... अयुध्यत ।।101।।

404 **अयुध्यत (युध् + लङ् < त)**– ‘युध्’ धातु से ‘अनद्यतने लङ्’ सूत्र से लङ् लकार।

न बिभाय .... न च ।।102।।

405. **बिभाय – (ञिभी + लिट् < तिप्)**– ‘ञिभी’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’[150] सूत्र से लिट् लकार।

406. **जिह्राय (ह्र + लिट् < तिप्)**– ‘ह्र’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

पिशाच .... ध्वजशालिनम् ।।103।।

407. **बभञ्ज (भञ्ज + लिट् < तिप्)**। ‘भञ्ज’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

संत्रासयाञ्चकाराऽरिं .... बाहुना।।104।।

408. **सन्त्रासयाञ्चकार – (त्रस् + लिट् < तिम्)** ‘त्रसी उद्वेगे’ धातु से ‘वर्तमाने लट्’[151] सूत्र से लट् लकार।

409. **पिप्राय (प्री + लिट् < तिप्)**। ‘प्रीञ्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

असीतो .... खगः ।।105।।

410. **कासाञ्चक्रे (कास् + लिट् < त)** ‘कास्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

411. **बेभिदाञ्चक्रे (भिद् + लिट् < त)** ‘भिद्’ धातु से ‘परोक्षे लिट’ सूत्र से लिट् लकार।

हन्तुं .... राक्षसः ।।106।।

412. **ईहाञ्चक्राते (ईह् + लिट् < आताम्)**– ‘ईह’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’[152] सूत्र से लिट् लकार

413. **पलायाञ्चक्रे (परा + अय् + लिट < त)** ‘परा’ उपसर्गपूर्वक ‘अय्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

414. **दयाञ्चक्रे–(दय + लिट् < त)**– ‘दय्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

उपासाञ्चक्रिरे .... पतत्रिणः ।।107।।

415. **उपासाञ्चक्रिरे (उप + आस् + लिट् < झ)** ‘उप’ उपसर्गपूर्वक ‘आस्’ धातु से ‘परोक्षे लिट्’[153] सूत्र से लिट् लकार।

416. **लोलूयञ्चक्रे (लूञ् + (यङन्त) + लिट् < त)**– ‘यङन्त’ ‘लूञ्’ लू धातु से ‘परोक्षे लिट्’ सूत्र से लिट् लकार।

प्रलुठितमवनौ .... रामकान्ताम् ।।108।।

417. **अगात् (इण् + लङ् < तिप्)**– ‘इण्’ धातु से ‘लुङ्’[154] सूत्र से लुङ् लकार।

1 वैयाकरणसिद्धांतकौमुदी-(गोकुलदास संस्कृत ग्रंथमाला 6) सूत्र संख्या 3/2/110

2 वही सूत्र संख्या 3/2/115

3 वही सूत्र संख्या 3/2/111

4 वही सूत्र संख्या 3/2/115

5 वही सूत्र संख्या 3/2/110

6 वही सूत्र संख्या 3/2/115

7 वही सूत्र संख्या 3/2/110

8 वही सूत्र संख्या 3/2/110

9 वही सूत्र संख्या 3/3/162

10 वही सूत्र संख्या 3/2/123

11 वही सूत्र संख्या 3/2/115

12 वही सूत्र संख्या 3/3/175

13 वही सूत्र संख्या 3/3/13

14 वही सूत्र संख्या 3/2/115

15 वही सूत्र संख्या 3/2/110

16 वही सूत्र संख्या 3/3/175

17 वही सूत्र संख्या 3/2/115

18 वही सूत्र संख्या 3/2/115

19 वही सूत्र संख्या 3/2/123

20 वही सूत्र संख्या 3/2/125

21 वही सूत्र संख्या 3/2/115

22 वही सूत्र संख्या 3/2/110

23 वही सूत्र संख्या 3/2/111

24 वही सूत्र संख्या 3/2/115

25 वही सूत्र संख्या 3/2/110

26 वही सूत्र संख्या 3/2/111

27 वही सूत्र संख्या 3/2/110

28 वही सूत्र संख्या 3/2/115

29 वही सूत्र संख्या 3/2/110

30 वही सूत्र संख्या 3/3/162

31 वही सूत्र संख्या 3/2/115

32 वही सूत्र संख्या 3/2/123

33 वही सूत्र संख्या 3/2/110

34 वही सूत्र संख्या 3/2/115

35 वही सूत्र संख्या 3/2/115

36 वही सूत्र संख्या 3/2/110

37 वही सूत्र संख्या 3/2/110

38 वही सूत्र संख्या 3/2/111

39 वही सूत्र संख्या 3/2/115

40 वही सूत्र संख्या 3/2/123

41 वही सूत्र संख्या 3/2/110

42 वही सूत्र संख्या 3/3/162

43 वही सूत्र संख्या 3/3/175

44 वही सूत्र संख्या 3/2/115

45 वही सूत्र संख्या 3/2/111

46 वही सूत्र संख्या 3/2/111

47 वही सूत्र संख्या 3/2/115

48 वही सूत्र संख्या 3/2/110

49 वही सूत्र संख्या 3/2/115

50 वही सूत्र संख्या 3/2/111

51 वही सूत्र संख्या 3/2/110

52 वही सूत्र संख्या 3/3/15

53 वही सूत्र संख्या 3/2/115

54 वही सूत्र संख्या 3/2/110

55 वही सूत्र संख्या 3/2/123

56 वही सूत्र संख्या 3/3/162

57 वही सूत्र संख्या 3/3/161

58 वही सूत्र संख्या 3/2/115

59 वही सूत्र संख्या 3/2/110

60 वही सूत्र संख्या 3/2/115

61 वही सूत्र संख्या 3/2/115

62 वही सूत्र संख्या 3/2/110

63 वही सूत्र संख्या 3/2/115

64 वही सूत्र संख्या 3/2/111

65 वही सूत्र संख्या 3/2/110

66 वही सूत्र संख्या 3/2/115

67 वही सूत्र संख्या 3/2/111

68 वही सूत्र संख्या 3/2/111

69 वही सूत्र संख्या 3/2/115

70 वही सूत्र संख्या 3/2/110

71 वही सूत्र संख्या 3/3/162

72 वही सूत्र संख्या 3/3/162

73 वही सूत्र संख्या 3/2/115

74 वही सूत्र संख्या 3/2/110

75 वही सूत्र संख्या 3/3/161

76 वही सूत्र संख्या 3/2/115

77 वही सूत्र संख्या 3/2/123

78 वही सूत्र संख्या 3/3/162

79 वही सूत्र संख्या 3/2/110

80 वही सूत्र संख्या 3/2/115

81 वही सूत्र संख्या 3/3/13

82 वही सूत्र संख्या 3/2/123

83 वही सूत्र संख्या 3/2/115

84 वही सूत्र संख्या 3/2/110

85 वही सूत्र संख्या 3/2/123

86 वही सूत्र संख्या 3/2/123

87 वही सूत्र संख्या 3/2/110

88 वही सूत्र संख्या 3/2/111

89 वही सूत्र संख्या 3/3/162

90 वही सूत्र संख्या 3/3/162

91 वही सूत्र संख्या 3/2/110

92 वही सूत्र संख्या 3/3/15

93 वही सूत्र संख्या 3/2/123

94 वही सूत्र संख्या 3/2/115

95 वही सूत्र संख्या 3/2/111

96 वही सूत्र संख्या 3/2/115

97 वही सूत्र संख्या 3/2/111

98 वही सूत्र संख्या 3/2/110

99 वही सूत्र संख्या 3/2/123

100 वही सूत्र संख्या 3/3/139

101 वही सूत्र संख्या 3/3/162

102 वही सूत्र संख्या 3/3/162

103 वही सूत्र संख्या 3/2/123

104 वही सूत्र संख्या 3/3/161

105 वही सूत्र संख्या 3/2/123

106 वही सूत्र संख्या 3/3/162

107 वहो सूत्र संख्या 3/2/115

108 वही सूत्र संख्या

109 वही सूत्र संख्या 3/2/111

110 वही ३/३/१९६२

111 वही ३/३/१५

112 वही ३/२/११५

113 वही ३/२/११०

114 वही ३/२/११०

115 वही ३/२/११५

116 वही ३/२/१११

117 वही ३/३/१६२

118 वही ३/२/१११
119 वही ३/२/११०
120 वही ३/२/११५
121 वही ३/२/१२३
122 वही ३/३/१५
123 वही ३/२/११५
124 वही ३/२/१२३
125 श्रद्धा ३/३/१६२
126 वही ३/२/११०
127 वही ३/२/१२३
128 वही ३/३/१६२
129 वही ३/२/१११
130 वही ३/२/११०
131 वही ३/३/१६
132 वही ३/३/१५
133 वही ३/२/११०
134 वही ३/२/११५
135 वही ३/२/११०
136 वही ३/३/१६२
137 वही ३/२/१२३
138 वही ३/३/१३९
139 वही ३/३१६१
140 वही ३/२/१२३
141 वही ३/२/११५
142 वही ३/२/१११
143 वही ३/२/१२३
144 वही ३/२/११०
145 वही ३/३/१६१
146 वही ३/३/१६२
147 वही ३/३/१६२
148 वही ३/२/११५
149 वही ३/३/१७५
150 वही ३/२/११५
151 वही ३/२/१२३
152 वही ३/२/११५
153 वही ३/२/११५
154 वही ३/२/११०

२. 'भट्टिकाव्यम्' गत तिङन्त क्रियापदों में सौत्र-अनिट्-सेट्-वेट् तथा प्रत्ययान्त धातुओं का संख्या निर्धारण एवं वर्गीकरण

प्रथम सर्ग

	तिङन्त क्रियापद	मूलधातु	सेट्	वेट्	अनिट्	सौत्र
		अभून्नृपः .... स्वयम्।।1।।				
1.	**अभूत्**	भू सत्तायाम्* (1)*	सेट्[1]	–	–	–
2.	**उपागमत्**	गम्लृ गतौ* (396)	–	–	अनिट्[2]	–
		सोऽध्यैष्ट .... न्यवधीदरींश्च।। २।।				
3.	**अध्यैष्ट**	इङ् अध्ययने* (1104)	–	–	अनिट्[3]	–
4.	**अयष्ट**	यजदेवपूजा संगतिकरणदानषु* (1191)	–	–	अनिट्[4]	–
5.	**अपारीत्**	पृ पालनपूरणयो:* (1134)	सेट्[5]	–	–	–
6.	**व्यजेष्ट**	जि जये* (9)	–	–	अनिट्[6]	–
7.	**सममंस्त**	मन ज्ञाने* (1263)	–	–	अनिट्[7]	–
8.	**न्यवधीत्**	हन् हिंसागत्यो:*(1100)	–	–	अनिट्[8]	–
		वसुनि .... निरास्थत् ।। ३।।				
9.	**व्याकारीत्**	कृ विक्षेपे* (1334)	सेट्[9]	–	–	–
10.	**अध्यवात्सीत्**	वस निवासे* (999)	–	–	अनिट्[10]	–
11.	**उपास्थित**	ष्ठा गतिनिवृत्तौ* (5)	–	–	अनिट्[11]	–
12.	**निरास्थत्**	असु क्षेपणे* (1221)	सेट्[12]	–	–	–
		पुण्यो .... वह्निरभिप्रणीतः।।४।।				
13.	**जज्वाल**	ज्वल दीप्तौ* (960)	–	–	अनिट्[13]	–

* यह चिह्न धातु से संबंधित है। इसी प्रकार आगे की धातु के नीचे लिखित संख्या को भी समझना चाहिए।

स पुण्यकीर्तिः .... ब्रह्मभिरिद्धबोधैः।।५।।

14.	**अध्यास्त**	आस उपवेशने*	सेट्[14]	–	–	–

अन्तर्निविष्टोज्ज्वलरत्नभासो .... गृहेभ्यः।।८।।

15.	**भान्ति**	भा दीप्तौ* (1061)	–	–	अनिट्[15]	–

धर्म्यासु .... तिसृषूत्तमासु।।९।।

16.	**अद्भिरेमे**	रमु क्रीडायाम्* (989)	–	–	अनिट्[16]	–

पुत्रीयता .... पुरमृष्यशृङ्गः।।1०।।

17.	**आनायि**	णीञ् प्रापणे* (884)	–	–	अनिट्[17]	–

ऐहिष्टं .... सुताऽनुबन्धम्।।11।।

18.	**ऐहिष्ट**	ईह चेष्टायाम्* (857)	सेट्[18]	–	–	–
19.	**व्यतानीत्**	तनु विस्तारे* (1499)	सेट्[19]	–	–	–

रक्षांसि .... नृपतेरमार्गीत्।।1२।।

20.	**निरास्थत्**	असु क्षेपणे* (1221)	सेट्[20]	–	–	–
21.	**अयाक्षीत्**	यजदेवपूजासंगति करण दानेषु* (991)	–	–	अनिट्[21]	
22.	**अहौषीत्**	हु दानाऽदनयोः* (1130)	–	–	अनिट्[22]	–
23.	**अमार्गीत्**	मार्गयाच्याऽन्वेषणयोः*(1952)	सेट्[23]	–	–	–

निष्ठां गते .... सुपुत्रान् ।।1३।।

24.	**प्राशुः**	अश भोजने* (1558)	सेट्[24]	–	–	–

कौसल्यया .... लक्ष्मणेन।।1४।।

25.	**असावि**	षूङ् प्राणिप्रसवे*(1241)	सेट्[25]	–	–	–
26.	**अभूत्**	भू सत्तायाम्* (1)	सेट्[26]	–	–	–
27.	**प्रासोष्ट**	षूङ् प्राणिप्रसवे*(1241)	सेट्[27]	–	–	–

आर्चीद् .... वरिष्ठः।। १५।।

28.	**आचीत्**	अर्चपूजायाम्* (104)	सेट्[28]	–	–	–
29.	**न्यषेधीत्**	षिध गत्याम्*(320)	सेट्[29]	–	–	–
30.	**उपानेष्ट**	णीञ् प्रापणे* (884)	–	–	अनिट्[30]	

वेदोऽङ्गवांस्तैरखिलोऽध्यगायि .... अध्यवात्सुः।। १६।।

31.	**अध्यगायि**	इङ् अध्ययने * (1104)	–	–	अनिट्[31]	–
32.	**उपायंसत**	यम उपरमे*(386)	सेट्[32]	–	–	–
33.	**अध्यवात्सुः**	वस निवासे* (999)	–	–	अनिट्[33]	

ततोऽभ्यगाद् .... मधुपर्कपाणि।। १७।।

34.	**अभ्यगात्**	इण् गतौ* (1075)	–	–	अनिट्[34]	–
35.	**आर्जिहत्**	अर्ह पूजायाम्*(564)	सेट्[35]	–	–	–

ऐषीः .... नृपस्तच्छिवमित्यवादीत्।। १८।।

36.	**ऐषीः**	इषगतौ*(1168)	सेट्[36]	–	–	–
37.	**अबुद्धाः**	बुध अवगमने* (968)	सेट्[37]	–	–	–
38.	**अवादीत्**	वद् व्यक्तायाम् वाचि * (998)	सेट्[38]	–	–	–
39.	**न्यवृतत्**	वृतु वर्तने* (955)	सेट्[39]	–	–	–

आख्यन्मुनिस्तस्यशिवं .... लक्ष्मणेन।। १९।।

40.	**आख्यत्**	ख्या प्रकथने*(1071)	–	–	अनिट्[40]	–
41.	**विघ्नन्ति**	हन् हिंसागत्योः* (1100)	–	–	अनिट्[41]	–
42.	**तृणेढु**	तृह् हिंसायाम्* (1495)	सेट्[42]	–	–	–

स .... वचस्तापसकु-ञ्जरेण।। २०।।

43.	**मुमोह**	मुह वैचित्ये*(1238)	सेट्[43]	–	–	–

44.	**ऊचे**	ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि * (1125)	–	–	अनिट्[44]	–

मया .... स्वसूनुम्।। २१।।

45.	**आप्थाः**	आप्लृ व्याप्तौ*(1307)	–	–	अनिट्[45]	–
46.	**मा कृत्था**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[46]	–
47.	**आप्स्माहि**	आप्लृ व्याप्तौ*(1307)	–	–	अनिट्[47]	–
48.	**प्रहिणु**	हि गतौ वृद्धौ च * (1295)	–	–	अनिट्[48]	–

घानिष्यते .... भारमग्रयम्।। २२।।

49.	**स्थायिष्यते**	ष्ठागतिनिवृतौ* (5)	–	–	अनिट्[49]	–
50.	**घानिष्यते**	हन् हिंसायाम्*(1100)	सेट्[50]	–	–	–
51.	**मा परिभूः**	भू सत्तायाम्* (1)	सेट्[51]	–	–	–
52.	**न्यस्यति**	असु क्षेपणे*	सेट्[52]	–	–	–

क्रुध्यन्कुलं .... सुतस्य।। २३।।

53.	**घक्ष्यति**	दह भस्मीकरणे*(552)	–	–	अनिट्[53]	–
54.	**अवालुलोचे**	लोच् दर्शने*(646)	सेट्[54]	–	–	–
55.	**अनुजज्ञे**	ज्ञा अवबोधने * (1540)	–	–	अनिट्[55]	–
56.	**तप्स्यति**	तप् संतापे * (333)	–	–	अनिट्[56]	–

आशीर्भिरभ्यर्च्य .... कुमारः।। २४।।

57.	**प्रतस्थे**	ष्ठा गतिनिवृतौ*	–	–	अनिट्[57]	–
58.	**इयाय**	इण गतौ* (1075)	–	–	अनिट्[58]	–

प्रयाष्यतः .... लक्ष्मणोऽभूत्।। २५।।

59.	**अभूत्**	भू सत्तायाम्* (1)	सेट्[59]	–	–	–

इषुमति .... रूदन्माङ्गलिक्यः।। २६।।

60.	**मा रूदन्**	रूदिरे अश्रु विमोचनने*(1087)	सेट्[60]		–	–

अथ .... पक्षिणाश्चाऽनुकूलाः।। २७।।

61.	**जगदुः**	गतव्यक्तायाम् वाचि * (297)	सेट्[61]	–	–	–
62.	**आजघ्नु**	हन् हिंसागत्यो* (1100)	–	–	अनिट्[62]	–
63.	**फुस्फोर**	स्फुर सञ्चलने* (1460)	सेट्[63]	–	–	–
64.	**चुकुवुः**	कु शब्दे* (1463)	–	–	अनिट्[64]	–

द्वितीय सर्ग

वनस्पतीनां .... ददर्श।।1।।

65.	**ददर्श**	दृशिर् प्रेक्षणे* (495)	–	–	अनिट्[65]	–

तरङ्गसङ्गाच्चपलैः .... षट्पदानि।। २।।

66.	**रेजुः**	राजृ दीप्तौ*(893)	सेट्[66]	–	–	–

बिम्बागतैस्तीरवनैः .... स्थलपद्महासैः।। ३।।

67.	**तेनुः**	तनु विस्तारे* (1499)	सेट्[67]	–	–	–

निशातुषारै .... तीरतरूर्दिनादौ।। ४।।

68.	**उपारूरोद**	रूदिरे अश्रु विमोचनने*(1087)	सेट्[68]	–	–	–

वनानि .... लक्ष्मीमालोकयाञ्चक्रुरिवादरेण।।५।।

69.	**आलोकयाञ्चक्रुः**	(आ) लोक् दर्शने*(912)	सेट्[69]	–	–	–

प्रभातवात .... अन्यसङ्गमम्।। ६।।

70.	**निरास**	असु क्षेपणे*(1221)	सेट्[70]	–	–	–
71.	**संसहते**	षह मर्षणे*	–	–	अनिट्[71]	–

दत्तावधानं .... मृगावित्।। ७।।

72.	**दधे**	धा धारणे* (1139)	–	–	अनिट्[72]	–

गिरेर्नितम्बे .... लक्ष्मीम्।।८।।

73.	**अनुचकार**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[73]	–

गर्जन् हरिः .... मृगेन्द्रनादान्।।९।।

74.	**बबन्ध**	बन्ध बन्धने* (1552)	–	–	अनिट्[74]	–

अदृक्षताऽम्भांसि .... व्यतिषङ्गवांश्च।।1०।।

75.	**अदृक्षत**	दृश् प्रेक्षणे* (495)	–	–	अनिट्[75]	–
76.	**अश्रोषत**	श्रुश्रवणे* (1296)	–	–	अनिट्[76]	–
77.	**आघ्रायि**	घ्रा गन्धोपदाने*(3)	–	–	अनिट्[77]	–

लताऽनुपातं .... आस्त।।11।।

78.	**अगृह्णात्**	ग्रह उपादाने* (1517)	सेट्[78]	–	–	–
79.	**उपास्पृशत्**	स्पर्श संस्पशने*(1412)	–	–	अनिट्[79]	–
80.	**आस्त**	आस उपवेशने*(1119)	सेट्[80]	–	–	–

तिग्मांशुरश्मि .... संभृतानि।।1२।।

81.	**अपश्यत्**	दृश् प्रेक्षणे* (495)	–	–	अनिट्[81]	–

दिव्यापिनीः .... वितृणाऽन्तरालाः।।1३।।

82.	**तुतोषः**	तुष पुष्टौ*(499)	–	–	अनिट्[82]	–

वियोगदुःखाऽनुभव .... गोष्ठान्।।1४।।

83.	**ऐक्षिष्ट**	ईक्ष दर्शने* (882)	सेट्[83]	–	–	–

स्त्रीभूषणं .... विलोक्य।।1५।।

84.	**मुमुदे**	मुद हर्षे*(726)	सेट्[84]	–	–	–

विवृत्तपार्श्वं .... अनन्दयत्तम् ।। १६ ।।

85.	**अनन्दयत्**	टुणदि समृद्धौ*(1786)	सेट्[85]	–	–	–

विचित्रमुच्चैः .... मृगणाम् ।। १७ ।।

86.	**ततान**	तनुविस्तारे*(1497)	–	–	–	–

सितारविन्दप्रचयेषु .... श्रोत्रसुखैर्निनादैः ।। १८ ।।

87.	**प्रतीयिरे**	इण् गतौ* (1075)	–	–	अनिट्[87]	–

न तज्जलं .... यन्मनः ।। १९ ।।

88.	**जहार**	हृ हरणे*(885)	सेट्[88]	–	–	–

तं यायजूकाः .... जगदर्चनीयम् ।। २० ।।

89.	**प्रानर्चुः**	अर्च पूजायाम्* (104)	सेट्[89]	–	–	–

विद्यामथैनं .... यातुधानान् ।। २१ ।।

90.	**अध्यापिपत्**	इङ् अध्ययने* (1104)	–	–	अनिट्[90]	–

आयोधने .... श्रेयसि जागरूक ।। २२ ।।

91.	**ददौ**	दा दाने* (1139)	–	–	अनिट्[91]	–

तं विप्रदर्शं .... निजघान रामः ।। २३ ।।

92.	**डुढौके**	ढौके: गत्यार्थम्*(627)	सेट्[92]	–	–	–
93.	**निजघान**	हन् हिंसागत्यो* (1100)	–	–	अनिट्[93]	–

अथाऽऽलुलोके .... चारूपतत्रिशिङ्ञम् ।। २४ ।।

94.	**आलुलोके**	लोक् दर्शने*(912)	सेट्[94]	–	–	–

क्षुद्रान्न .... लता विलोला: ।। २५ ।।

95.	**जक्षुः**	अद् भक्षणे* (1059)	–	–	अनिट्[95]	–
96.	**विसश्वसे**	श्वस प्राणने* (1090)	सेट्[96]	–	–	–
97.	**चकाशिरे**	काश्रृ दीप्तौ*(1094)	सेट्[97]	–	–	–

अपूपुजन .... क्षितिपालपुत्रौ ।। २६ ।।

98.	**अपूपुजन्**	पूज पूजायाम्*(1586)	सेट्[98]	–	–	–
99.	**प्रत्यग्रहीष्टाम्**	ग्रह उपादाने* (1517)	सेट्[99]	–	–	–

दैत्याऽभिभूतस्य .... अभाषिषाताम् ।। २७ ।।

100.	**अवोढम्**	वह् प्रपाणे* (996)	–	–	अनिट्[100]	–
101.	**रक्षतम्**	रक्षे पालने* (567)	सेट्[101]	–	–	–
102.	**अभाषिषाताम्**	भाष व्यक्तायां वाचि*(832)	सेट्[102]	–	–	–

तान् प्रत्यवादीदथ .... नोऽरिसमिन्धनेषु ।। २८ ।।

103.	**प्रत्यवादीत्**	वद व्यक्तायां वाचि * (998)	सेट्[103]	–	–	–
104.	**प्रस्तुत**	ष्टुञ् स्तुतौ* (1124)	–	–	अनिट्[104]	–
105.	**संधुक्ष्यताम्**	धुक्ष संदीपने*(876)	सेट्[105]	–	–	–

प्रतुष्टुवुः कर्म .... प्रसर्पत् ।। २९

106.	**प्रतुष्टुवुः**	स्तु स्तुतौ*(1124)	–	–	अनिट्[106]	–
107.	**चिचिते**	चिती संज्ञाने*(278)	सेट्[107]	–	–	–

अपिङ्गरूक्षोर्ध्व .... चाऽऽनशेऽब्दैः ।। ३० ।।

108.	**आनशे**	अशू व्याप्तौ सङ्घाते च*(1314)	सेट्[108]	–	–	–

अधिज्यचापः .... शुद्धेषुरमन्दकर्षी।। ३1।।

109.	**जघान**	हन् हिंसागत्योः* (1100)	–	–	अनिट्[109]	–

गाधेयदिष्टं .... महार्थम्।। ३२।।

110.	**जगाद्**	गद व्यक्तायां वाचि * (297)	सेट्[110]	–	–	–

आत्मम्भरिस्त्वं .... न कस्मात्।। ३३।।

111.	**दयसे**	दयदानगतिरक्षणहिंसा दानेषु* (799)	सेट्[111]	–	–	–
112	**हंसि**	हन् हिंसागत्योः* (1100)	–	–	अनिट्[112]	–
113.	**व्रजन्ति**	व्रज गतौ* (137)	सेट्[113]	–	–	–

अद्मो द्विजान् .... वेदवृत्ते।। ३४।।

114.	**अद्मः**	अद भक्षणे*(1059)	–	–	अनिट्[114]	–
115.	**निहन्मः**	हन हिंसागत्योः* (1100)	–	–	अनिट्[115]	–
116.	**कुर्मः**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[116]	–
117.	**अध्यकारिष्महि**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[117]	–

धर्मोऽस्ति .... धर्तकार्मुकेषुः।। ३५।।

118.	**अस्ति**	अस भवि*(1102)	सेट्[118]	–	–	–
119.	**व्यतिस्ते**	अस भवि*(1102)	सेट्[119]	–	–	–
120.	**प्रणिहन्मे**	हन् हिंसागत्यो* (1100)		–	अनिट्[120]	–

इत्थंप्रवादं .... प्रधनान्निरास्थत्।। ३६।।

121.	**प्रचक्रतुः**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[121]	–
122.	**निरास्थत्**	असु क्षेपणे*(1221)	सेट्[122]	–	–	–

	जग्मुः प्रसादं .... मुनिना कुमार।। ३७।।					
123.	**जग्मुः**	गम्लृ गतौ* (996)		–	अनिट्[123]	–
124.	**बभूव**	भू सत्तायाम्* (1)	सेट्[124]	–	–	–
125.	**ववृते**	वृतु वर्तने* (955)	सेट्[125]	–	–	–
126.	**बभाषे**	भाष् व्यक्तायां वाचि * (832)	सेट्[126]	–	–	–
	महीय्यमाना .... न भूमिः।। ३८।।					
127.	**हृणीयते**	हृणीङ् रोपणे लज्जायाम् च*(1133)	सेट्[127]	–	–	–
	बलिबर्बबन्धे .... गुरूर्न तस्य।। ३९।।					
128.	**बबन्धे**	बन्ध बन्धने* (1552)	–	–	अनिट्[128]	–
129.	**ममन्थे**	मन्थ विलोडने*(1547)	सेट्[129]	–	–	–
130.	**विजिग्ये**	जि जये* (8)	–	–	अनिट्[130]	–
131.	**ऊहे**	वह प्राहणे*(999)	–	–	अनिट्[131]	–
	इति ब्रुवाणो .... निजिघृक्षयिष्यन्।। ४०।।					
132.	**आञ्जिहत्**	अहि गतौ*	सेट्[132]	–	–	–
	इतः स्म .... नृसिंहौ।। ४1।।					
133.	**इतः स्म**	इण् गतौ * (1075)	–	–	अनिट्[133]	–
134.	**औजिहताम्**	ऊह वितर्के* (870)	सेट्[134]	–	–	–
	अजिग्रहत्तं .... रघुनन्दनस्तत्।। ४२।।					
135.	**अजिग्रहत्**	ग्रह उपादाने* (1517)	सेट्[135]	–	–	–
136.	**आर्दिदत्**	अर्द हिंसायाम्*(1962)	सेट्[136]	–	–	–
137.	**अभाङ्क्षीत्**	भञ्जो आमर्दने* (1486)	–	–	अनिट्[137]	–

ततो नदीष्णान् .... मैथिलमर्त्यमुख्यः।।४३।।

138.	**व्यसर्जयत्**	सृज विसर्गे*(1255)	–	–	अनिट्[138]	–

क्षिप्रं .... मिथिलामगच्छत्।।४४।।

139.	**अगच्छत्**	गम्लृ गतौ* (396)	–	–	अनिट्[139]	–

वृन्दिष्ठं .... वरिष्ठम्।।४५।।

140.	**आर्चीत्**	अर्च पूजायाम्* (104)	सेट्[140]	–	–	–

त्रिवर्गपारीणमसौ .... बभाषे।।४६।।

141.	**अगात्**	इण् गतौ * (1075)	–	–	अनिट्[141]	–
142.	**बभाषे**	भाष व्यक्तायां वाचि * (832)	सेट्[142]	–	–	–

हिरण्मयी शाललतेव .... मैथिली।।४७।।

143.	**ददे**	दा दाने* (1138)	–	–	अनिट्[143]	–

लब्ध्वां ततो .... रघुवर्ग्यलक्ष्मीम्।।४८

144.	**उदवोढ**	वह् प्राहणे*(996)	–	–	अनिट्[144]	–

सुप्रातम् .... बलमध्वनीनम्।।४९।।

145.	**अगात्**	इण् गतौ * (1075)	–	–	अनिट्[145]	–

विशङ्कटो .... जामदग्न्यः।।५०।।

146.	**ऐति स्म**	इण गतौ * (1075)	–	–	अनिट्[146]	–

उच्चैरसौ .... अनुनिनीषुरूचे।।५1।।

147.	**आह्वत**	ह्वेञ् स्पर्धायाम् शब्दे *(994)	–	–	अनिट्[147]	–
148.	**कुरू**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[148]	–

149.	**मा अतियासीः**	या प्रापणे*(1062)	सेट्[149]	–	–	–	
150.	**ऊचे**	ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि *(1125)	–	–	अनिट्[150]	–	

अनेकशो .... राम! रामे ।।५२।।

151.	**अताप्सीः**	तृप प्रीणने *(1308)	सेट्[151]	–	–	–	

अजीगणत् .... तस्य।।५३।।

152.	**अजीगणत्**	गण संख्याने*	सेट्[152]	–	–	–	
153.	**व्यकार्क्षीत्**	कृश् विलेखने*(1319)	–	–	अनिट्[153]	–	
154.	**अलावीत्**	लूञ् छेदने*(1519)	सेट्[154]	–	–	–	

जिते नृपाऽरौ .... मार्गान्।।५४।।

155.	**जगाहिरे**	गाहु विलोडने*(871)	सेट्[155]	–	–	–	

अथ.. तूर्णमायादयोध्याम्।।५५।।

156.	**आयात्**	या प्रापणे*(1062)	–	–	अनिट्[156]	–	

तृतीय सर्ग

वधेन.. नाऽऽसीत्।।1।।

157.	**आसीत्**	भू सत्तायाम्*(1)	सेट्[157]	–	–	–	

ततः .... समनीचकार।।२।।

158.	**सुमनीचकार**	डुकृञ् करणे*(888)	–	–	अनिट्[158]	–	

आदिक्षत् .... महार्धरत्नम्।।३।।

159.	**आदिक्षत्**	दिश अतिसर्जने*(1318)	–	–	अनिट्[159]	–	

प्रास्थापयत् .... तीर्थजलाऽर्थमाशु।।४।।

160	**प्रास्थापयत्**	ष्ठा गतिनिवृतौ*(5)	–	–	अनिट्[160]	–	

उक्षाम्प्रचक्रुः .... नियुक्ताः।।५।।

161.	**उक्षाम्प्रचक्रुः**	उक्ष सेचने*(566)	सेट्[161]	–	–	–
162.	**बबन्धुः**	बन्ध बन्धने* (1552)		–	अनिट्[162]	–
163.	**मुमुचुः**	मुद प्रमोचन मोदनयोः*	सेट्[163]	–	–	–
164.	**चकरूः**	कृ विक्षेपे*(1334)	सेट्[164]	–	–	–

मातामहा .... वनप्रयाणम्।।६।।

165.	**बवार**	वृञ् वरणे*(1523)	सेट्[165]	–	–	–

कर्णेजपैः .... सनरेन्द्रमृत्युम्।।७।।

166.	**व्यमृशत्**	मृश आमर्शने*	–	–	अनिट्[166]	–

वसुनि .... निचख्ने।।८।।

167.	**अवजज्ञे**	ज्ञा अवबोधने* (1540)	–	–	अनिट्[167]	–
168.	**निचख्ने**	खु अवदारणे*(913)	सेट्[168]			

ततः प्रविव्राजयिषुः .... शोचन्।।९।।

169.	**आदिक्षत्**	दिश अतिसर्जने*(1318)	–	–	अनिट्[169]	–

केचित् .... जगाद।।१०।।

170.	**निनिन्दुः**	णिदि कुत्सायाम्*(311)	सेट्[170]	–	–	–
171.	**विचुक्रुशुः**	क्रुश आह्वाने रोदने च* (986)	–	–	अनिट्[171]	–
172.	**ऊचुः**	ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि * (1125)	–	–	अनिट्[172]	–
173.	**जगाद**	गद व्यक्तायां वाचि * (297)	सेट्[173]	–	–	–

गतो वनं .... मनांसि।।11।।

174.	**भविता**	भू सत्तायाम* (1)	सेट्[174]	–	–	–

175.	**देहे**	दा दाने* (1138)	–	–	अनिट्[175]	–

प्रस्थास्यमानापुयसेदुषस्तौ .... कृताऽर्थान्।। 1२।।

176.	**उचतुः**	ब्रूञ् व्यक्तायाम् वाचि*(1125)	–	–	अनिट्[176]	–

असृष्ट यो यश्च .... वनस्य मोक्षः।। 1३।।

177.	**असृष्ट**	सृज विसर्गे* (1255)	–	–	अनिट्[177]	–
178.	**अरक्षीत्**	रक्ष पालने* (567)	सेट्[178]	–	–	–
179.	**अपुषत्**	पुष पुष्टौ*(1175)	सेट्[179]	–	–	–
180.	**अस्ति**	अस भवि*(1102)	–	–	अनिट्[180]	–

विद्युत्प्रणाशं .... गुरुणाम्।। 1४।।

181.	**अवास्थित**	–	–	–	अनिट्[181]	–

पौरा निवर्तध्वमिति .... स्मः सूतम्।। 1५।।

182.	**निवर्तध्वम्**	वृतु वर्तने* (955)	सेट्[182]	–	–	–
183.	**भवेत्**	भू सत्तायाम* (1)	सेट्[183]	–	–	–
184.	**मा दर्शत**	दृश प्रेक्षणे* (495)	सेट्[184]	–	–	–
185.	**न्यगादीत्**	गद व्यक्तायां वाचि*(297)	सेट्[185]	–	–	–
186.	**आह स्म**	ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि*(1125)		–	अनिट्[186]	–
187.	**निवर्तय**	वृतु वर्तने* (955)	सेट्[187]	–	–	–

ज्ञात्वेङ्गितै .... अपजगाम रामः।। 1६।।

188.	**अपजगामः**	गम्लृ गतौ* (396)	–	–	अनिट्[188]	–

अस्राक्षुरस्त्रं .... न्यवृतन्मनोभिः।। 1७।।

189.	**अस्राक्षुः**	सृज विसर्गे*(1255)	–	–	अनिट्[190]	–

190.	**न्यश्वसिषु**	श्वस प्राणने* (1090)	सेट्[191]	–	–	–

सूतोऽपि गङ्गासलिलै .... पुरमाविवेश।। 1८।।

191.	**आविवेश**	विश प्रवेशने*(1415)	–	–	अनिट्[192]	–

प्रतीय सा .... सर्वचेष्टा।। 1९।।

192.	**ददृशे**	दृश प्रेक्षण* (425)	–	–	अनिट्[193]	–

विलोक्य .... वस्त्रे।। २०।।

193.	**अच्योष्ट**	च्युङ्‌ गतौ*(594)	–	–	अनिट्[194]	–
194.	**व्यलिपत्**	लिप उपदेहे*(1324)	–	–	अनिट्[195]	–
195.	**व्यवसिष्ट**	वस आच्छादने*(1117)	सेट्[196]	–	–	–
196.	**ऐषीत्**	इष् इच्छायाम्*(1419)			[197]	

आसिष्ट नैकत्र .... द्युनिवासभूयम्।। २1।।

197.	**आसिष्ट**	आस उपवेशने*(1119)	सेट्[198]	–	–	–
198.	**व्यरंसीत्**	रमु क्रीडायाम्*(989)	–	–	अनिट्[199]	–
199.	**अगात्**	इण् गतौ*(1075)	–	–	अनिट्[200]	–
200.	**ऐषीत्**	इष् इच्छायाम्*(1419)			अनिट्[201]	

विचकुशुर्भूमि .... चैव।। २२।।

201.	**विचुक्रुशुः**	क्रुश आह्वाने रोदने च* (986)	–	–	अनिट्[202]	–
202.	**लुलुञ्चुः**	लुञ्च अपनयने*	सेट्[203]	–	–	–
203.	**पेतुः**	पत्लृ गतौ*(962)	सेट्[204]	–	–	–
204.	**उन्मुमुचुः**	मुच् मोक्षणे*(1320)	–	–	अनिट्[205]	–
205.	**बभञ्जिरे**	भञ्ज आमर्दने*(1486)	–	–	अनिट्[206]	–
206.	**जघ्नुः**	हन् हिंसायाम्*	–	–	अनिट्[207]	–

ताः सान्त्वयन्ती .... यूनः।। २३।।

207.	**न्यक्षिपत्**	क्षिप् प्रेरणे*(1317)	–	–	अनिट्[208]	–
208.	**प्रास्थापयत्**	ष्ठा गतिनिवृतौ* (5)	–	–	अनिट्[209]	–

सुप्तो नभस्तः .... राज्ञः।। २४।।

209.	**निरीक्षाञ्चक्रे**	ईक्ष दर्शने* (882)	सेट्[210]	–	–	–
210.	**आख्यत्**	ख्या प्रकथने*(1071)	–	–	अनिट्[211]	–

अशिश्रवन् .... गुरूणाम्।। २५।।

211.	**आंहिष्ट**	अहि गतौ*	सेट्[212]	–	–	–

बन्धूनशङ्किष्ट .... अरासिषुश्च।। २६।।

212.	**अयासिषु**	या प्रापणे*	–	–	अनिट्[213]	–
213.	**अरासिषुः**	रस शब्दे*(542)	सेट्[214]	–	–	–

स प्रोषिवानेत्य .... पणाऽऽयान्।। २७।।

214.	**शुश्राव**	श्रु श्रवणे* (1296)	सेट्[215]	–	–	–
215.	**उपलेभं**	लभ् प्राप्तौ* (786)	–	–	अनिट्[216]	–

चक्रन्दुः .... प्रतिपूर्णमन्या।। २८।।

216.	**चक्रन्दुः**	क्रन्द् रोदने*(316)	–	–	अनिट्[217]	–

दिदृक्षमाणः .... वृत्तमस्मै।। २९।।

217.	**ऐक्षत**	ईक्ष दर्शने* (882)	सेट्[218]	–	–	–
218.	**अपृच्छत्**	प्रच्छ ज्ञीप्सायाम्*(1347)	–	–	अनिट्[219]	–
219.	**आख्यन्**	ख्या प्रकथने*(1071)	–	–	अनिट्[220]	–

आबद्धभीम .... न्यमाङ्क्षीत्।। ३०।।

220.	**उपालब्ध**	लभ प्राप्तौ* (786)	–	–	अनिट्[221]	–

221.	**न्यमाङ्क्षीत्**	टुमस्जौ शुद्धौ*(1097)	–	–	अनिट्[222]	–

नृपाऽत्मजौ .... बह्वनर्थम्।। ३1।।

222.	**चिक्लिशतुः**	क्लिश उपतापे*(1557)	सेट्[223]	–	–	–
223.	**ममार**	मृङ् प्राणत्यागे*(1333)	–	–	अनिट्[224]	–

नैतन्मतं मत्कमिति .... रोरूदावान्।। ३२।।

224.	**अशप्यत्**	शप आक्रोशे* (916)	–	–	अनिट्[225]	–

तं सुस्थयन्तः .... अध्वरपात्रजातम्।। ३३।।

225.	**समुदूहुः**	वह प्रापणे* (996)	–	–	अनिट्[226]	–

श्रोत्राक्षिनासावदनं .... चिताग्निम्।। ३५।।

226.	**जुहाव**	हु दानादानयोः*(1130)	–	–	अनिट्[227]	–

कृतेषु .... सपौरः।। ३६।।

227.	**प्रायात्**	या प्रापणे*(1062)	–	–	अनिट्[228]	–

शीघ्रायमाणैः .... रथाश्वमिश्रैः।। ३७।।

228.	**चकासाञ्चकार**	चकासृ दीप्तौ*(1094)	सेट्[229]	–	–	–

उच्चिक्यिरे .... विराश्रमुश्च।। ३८।।

229.	**उच्चिक्यिरे**	चिञ् चयने*(1290)	–	–	अनिट्[230]	–
230.	**सस्नुः**	ष्णा शौच्चे*(1064)	–	–	अनिट्[231]	–
231.	**पिप्रियुः**	प्रीञ् तृप्ति कान्त्योः*(1510)	–	–	अनिट्[232]	–
232.	**आरेटुः**	रट परिभाषणे*(211)	सेट्[233]	–	–	–
233.	**विशश्रमुः**	श्रम तपसि खेदे च* (1233)	सेट्[234]	–	–	–

सम्प्राप्य तीरं .... श्रमवृत्तमस्ते ।। ३९ ।।

234.	**ययुः**	या प्रापणे*(1062)	–	–	अनिट्[235]	–

ईयु .... पयोभिः ।। ४० ।।

235.	**व्यास्यन्**	असु क्षेपणे*(1221)	सेट्[236]	–	–	–
236.	**ईयुः**	इण् गतौ*(1075)	–	अनिट्[237]	–	–
237.	**विशश्राम**	श्रमु तपसि खेदे*(1233)	–	अनिट्[238]	–	–

वाचंयमान .... सशिष्यम् ।। ४1 ।।

238.	**प्रणेमुः**	णम प्रह्वत्वे शब्दे*(388)	सेट्[239]	–	–	–

आतिथ्यमेभ्यः .... द्राघिमवत्युदूहुः ।। ४२ ।।

239.	**उदूहुः**	ऊह वितर्के*(870)	सेट्[240]	–	–	–

आज्ञां .... वनिताश्च तस्मिन् ।। ४३ ।।

240.	**प्रतीषुः**	इष् इच्छायाम्*(1419)	–	–	अनिट्[241]	–
241.	**उपास्थुः**	स्था*(5)	–[242]	–	–	–
242.	**जगुः**	गम्लृ गतौ* (396)	–	–	अनिट्[243]	–
243.	**ननृतुः**	नृती गात्रविक्षेप*(1152)	सेट्[244]	–	–	–
244.	**नेमुः**	नम् प्रह्वत्वे*(388)	–	–	अनिट्[245]	–
245.	**ऊचुः**	ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि*(1125)	–	–	अनिट्[246]	–

वस्त्राऽन्नपानं .... शेध्वम् ।। ४४ ।।

246.	**निवद्ध्वम्**	वस आच्छादने*(1117)	सेट्[247]	–	–	–
247.	**आद्ध्वम्**	आस उपवेशने*(1119)	सेट्[248]	–	–	–
248.	**पिबत**	पा पाने*(2)	–	–	अनिट्[249]	–
249.	**अत्त**	अद् भक्षणे*(1059)	–	–	अनिट्[250]	–
250.	**शेध्वम्**	शीङ् स्वप्ने*(1105)	सेट्[251]	–	–	–

ते भुक्तवन्तः .... समीयुः ।। ४५ ।।

251.	**समीयुः**	इण् गतौ*(1075)	–	–	अनिट्[253]	–

वैखानसेभ्य .... चित्रकूटम् ।। ४६ ।।

252.	**आनंहिरे**	अहि गतौ*	सेट्[254]	–	–	–

शुक्लोत्तरा .... स्ववर्ग्यान् ।। ४८ ।।

253.	**औहिष्ट**	ऊह वितर्के*(870)	सेट्[255]	–	–	–

समूलकाषं .... रामवियोगशोकात् ।। ४९ ।।

254.	**चकषुः**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[256]	–

अरण्ययाने .... कनीयान् ।। ५1 ।।

255.	**प्रायुक्त**	युजिर योगे*(1476)	–	–	अनिट्[257]	–
256.	**वह**	वह प्राहणे* (996)	–	–	अनिट्[258]	–
257.	**आभाषि**	भाष व्यक्तायां वानि* (832)	सेट्[259]	–	–	–

कृती श्रुती .... पुत्रकाम्या ।। ५२ ।।

258.	**स्यात्**	अस भुवि*(1102)	–	–	अनिट्[260]	–

अस्माकमुक्तं .... पृथ्वीम् ।। ५३ ।।

259.	**मन्यसे**	मन ज्ञाने*(1263)	–	–	अनिट्[261]	–
260.	**ईशिषे**	ईश ऐश्वर्ये*(111)	सेट्[262]	–		–
261.	**जिह्रेषि**	ह्री लज्जायाम्*(1133)	–	–	अनिट्[263]	–
262.	**जहीहि**	ओहाक् त्यागे*(1131)	–	–	अनिट्[264]	–
263.	**शाधि**	शास अनुशिष्टौ*(1095)	सेट्[265]	–	–	–
264.	**व्रज**	वज्र गतौ*(137)	सेट्[266]	–	–	–

वृद्धौरसां .... धर्म्यम् ।। ५४ ।।

265.	**प्रयुक्थाः**	युजिर योगे*(1476)	–	–	अनिट्[267]	–

266.	**प्राह स्म**	अस भुवि*(1102)	–	–	अनिट्[268]	–

उर्जस्वलम् .... शान्तमेतत्।।५५।।

267.	**स्याम्**	अस भुवि*(1102)	–	–	अनिट्[269]	–

इति निगदितवन्तं .... कारकयाऽस्मन्मतेन।।५६।।

268.	**जगाद**	गदव्यक्तायां वाचि *(297)	सेट्[270]	–	–	–
269.	**व्रज**	व्रज गतौ*(137)	सेट्[271]	–	–	–
270.	**कारय**	डुकृञ् करणे*(888)	–	–	अनिट्[272]	–

चतुर्थ सर्ग

निवृत्ते .... ईयिवान्।।1।।

271.	**प्रपेदे**	पद् गतौ*(581)	–	–	अनिट्[273]	–

अटाट्यमानः .... रक्षसा।।२।।

272.	**जहे**	हृञ् हरणे*(885)	–	–	अनिट्[274]	–

अवाक्शिरसम् .... निचख्नतुः।।३।।

273.	**निचख्नतुः**	खनु अवदारणे*(913)	सेट्[275]	–	–	–

आंहिषातां .... शरणैषिणाम्।।४।।

274.	**आंहिषाताम्**	अहि गतौ*	–	–	अनिट्[276]	–

पुरो रामस्य .... मुनिकेतनम्।।५।।

275.	**जुहुवाञ्चकार**	हु दानाऽदनया*(1130)	–	–	अनिट्[277]	–

यूयं .... गतिम्।।६।।

276.	**समैष्यथ**	इण् गतौ*(1075)	–	–	अनिट्[278]	–
277.	**आसिष्महि**	आस उपवेशने*(1119)	सेट्[279]			–

278.	**स्थ**	अस् भुवि*(1102)	–	–	अनिट्[280]	–
279.	**यामः**	या प्राणने*(1062)	–	–	अनिट्[281]	–

तस्मिन् .... आश्रमान्।।७।।

280.	**उवास**	वस निवासे*(999)	–	–	अनिट्[282]	–

वनेषु .... विचक्रमे।।८।।

281.	**विचक्रमे**	वे पादविहरणे*	–	–	अनिट्[283]	–

ऋग्यजुषम् .... होमवान्।।९।।

282.	**बुभुजे**	भुज पालनाभ्यवहारयोः*(1487)	–	–	अनिट्[284]	–

हित्वाऽशित .... निर्भयः।।11।।

283.	**आनभ्र**	अभ्र गतौ*(407)	सेट्[285]	–	–	–

व्रातीनव्यालदीप्राऽस्त्रः .... नैकटिकाश्रमान्।।१२।।

284.	**आट**	अट् गतौ*(194)	सेट्[286]	–	–	–

परेद्यव्यद्य .... प्रियम्भावुकतामगात्।।1३।।

285.	**अगात्**	इण गतौ*(1075)	–	–	अनिट्[287]	–

ददृशे .... सौमित्रयेऽसकौ।।1५।।

286.	**ददृशे**	दृश प्रेक्षणे *(495)	–	–	अनिट्[288]	–

तामुवाच .... अरार्यसे।।२1।।

287.	**उवाच**	ब्रू व्यक्तायां वाच*(1125)	–	–	अनिट्[289]	–
288.	**अरार्यसे**	ऋ गतौ*(1539)	–	–	अनिट्[289अ]	–

मानुषानाभिलष्यन्ती .... कथमञ्चसि।। २२।।

289.	**अञ्चसि**	अञ्चुगतौ*(890)	सेट्[290]	–	–	–

राघवं .... औपकर्णिकलोचन।। २४।।

290.	**इच्छ**	इष् इच्छायाम्*(1419)	सेट्[291]	–	–	–

बद्धा .... धतेऽन्यदुर्वहम्।। २६।।

291.	**धत्ते**	डुधाञ् धारणे*(1139)	–	–	अनिट्[292]	–

ततो वावृत्यमानाऽसौ .... वचः।। २८।।

292.	**न्यविक्षत**	विश प्रवेशने*(1415)	–	–	अनिट्[293]	–

अस्त्रीकः .... मा मुचः।। २९।।

293.	**व्रज**	व्रज गतौ* (137)	सेट्[294]	–	–	–
294.	**अब्रवीत्**	ब्रू व्यक्तायां वाचि* (1125)	–	–	अनिट्[295]	–

लक्ष्मणं सा .... पुनः।। ३०।।

295.	**अगमत्**	गम्लृ गतौ* (396)	–	–	अनिट्[296]	–

तस्याः .... मुखम्।। ३1।।

295. अ	**चकार**	डुकृञ् करणे*(888)	सेट्[297]	–	–	–

अहं शूर्पणखा .... साऽब्रवीत्।। ३२।।

296.	**अब्रवीत्**	ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि * (1125)	–	–	अनिट्[298]	–

पर्यशाप्सीत् .... मुहुः।। ३३।।

297.	**पर्यशाप्सीत्**	शप आंक्रोशे*	–	–	अनिट्[299]	–
298.	**अपिस्फवत्**	स्फायी ओप्यायी वृद्धौ*	सेट्[300]	–	–	–

खरदूषणयोः .... दण्डकारण्यवासिनम।। ३४।।

299.	**पर्यदेविष्ट**	देवृ देवने*(817)	सेट्[301]	–	–	–

कृते सौभागिनेयस्य .... तयोः।। ३५।।

300.	**पश्यतम्**	दृक्ष् प्रेक्षणे* (495)	–	–	अनिट्[302]	–

मम रावणनाथाया .... क्षमम्।। ३६।।

301.	**क्षमध्वम्**	क्षमूष सहने* (1235)	सेट्[304]	–	–	–

असंस्कृत्रिम .... माम्।। ३७।।

302.	**मा पर्यभूताम्**	भू सत्तायाम्* (1)	सेट्[305]	–	–	–

श्वः श्रेयसम् .... मा रूदः।। ३८।।

303.	**अवाप्तासि**	आप्लृ व्याप्तौ*(1307)	–	–	अनिट्[306]	–
304.	**प्राणिवः**	अन प्राणने* (1264)	–	–	अनिट्[307]	–
305.	**आश्वसिहि**	श्वस प्राणने* (1090)	सेट्[308]	–	–	–
306.	**मा रूदः**	रूदिर अश्रु विमोचने*(1087)	सेट्[309]	–	–	–

जक्षिमः .... क्षमामहे।। ३९।।

307.	**जक्षिमः**	जक्षमक्षहसनयो*(1091)	सेट्[310]	–	–	–
308.	**क्षमामहे**	क्षम सहने* (1235)	सेट्[311]	–	–	–

तौ चतुर्दश .... अन्वितौ।। ४०।।

309.	**निर्ययतुः**	या प्रापणे*(1062)	–	–	अनिट्[312]	–

अथ सम्पततो .... मृधे।। ४1।।

310.	**अहताम्**	हन् हिंसागत्यो* (1100)	–	–	अनिट्[313]	–

तै .... मेदिनी।। ४२।।

311.	**पप्रे**	प्रा पूरणे*	–	–	अनिट्[314]	–

केचिद्वेपथुम .... केचन।। ४३।।

312.	**आसेदुः**	सद् उपवेशने*	–	–	अनिट्[315]	–

मृगयुमिव .... पतात्रिराजम्।। ४४।।

313.	**उपाययौ**	या प्रापणे*	–	–	अनिट्[316]	–

शितविशिखनिकृत .... लिङ्गतुल्य।। ४५।।

314.	**उपनिदधे**	डुधाञ् धारणे*(1062) (1139)	–	–	अनिट्[317]	–

पञ्चम सर्ग

निराकरिष्णू .... खरदूषणौ।।1।।

315.	**चेरतु**	चर गतौ*(410)	सेट्[318]	–	–	–

तौ .... रणे।। २।।

316.	**अकार्ष्टाम्**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[319]	–

अथ .... यमसाञ्चक्रतुर्द्विषौ।। ३।।

317.	**चक्रतुः**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[320]	–

हतबन्धुः .... पतिम्।। ४।।

318.	**जगाम**	गम्लृ गतौ* (396)	–	–	अनिट्[321]	–

सम्प्राप्य .... रावणाऽन्तिके।। ५।।

319.	**चक्रन्द**	क्रन्द रोदने*	–	–	अनिट्[322]	–
320.	**अशेदीत्**	रूदिरे श्रमु विमोचने*(1087)	सेट्[323]	–	–	–

दण्डकान् .... भूमिवर्धनौ।। ६।।

321.	**अध्यवात्ताम्**	वस निवासे* (999)	–	–	अनिट्[324]	–
322.	**अकृषाताम्**	कृष विलेखने* (1319)	–	–	अनिट्[325]	–

विग्रहस्तव .... नयः।।७।।

323.	**असि**	अस् भुवि* (1102)	सेट्[326]	–	–	–

यद्यहं .... दुर्बलः।।८।।

324.	**आयास्यत**	या प्राणने*(1062)	–	–	अनिट्[327]	–
325.	**अज्ञास्यः**	ज्ञा अवबोधने*(1540)	–	–	अनिट्[328]	–

अध्वरेषु .... अधुना।।11।।

326.	**अत्तु**	अद् भक्षणे*(1059)	–	–	अनिट्[329]	–
327.	**ऐति**	इण् गतौ*(1075)	–	–	अनिट्[330]	–

आमिक्षीयं .... राक्षसाः।।1२।।

328.	**उपघ्नन्ति**	हन् हिंसागत्यौ* (1100)	–	–	अनिट्[331]	–

युवजानिः .... शिलीमुखैः।।1३।।

329.	**हन्ति**	हन् हिंसागत्यौ* (1100)	–	–	अनिट्[332]	–

मांसानि .... दिशः।।1४।।

330.	**अश्नन्ति**	अश् भोजने* (1558)	सेट्[333]	–	–	–
331.	**बिभ्यति**	ञिभी भये* (1132)	–	–	अनिट्[334]	–
332.	**अश्नुवते**	अश् भोजने* (1558)	सेट्[335]	–	–	–

कुरू बुद्धिं .... नय।।1५।।

333.	**त्यज्**	त्यज् हानौ* (172)	–	–	अनिट्[336]	–
334.	**कुरू**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[337]	–
335.	**नय**	नीञ् प्रापणे* (884)	–	–	अनिट्[338]	–

सहायवन्तः .... मा श्वसीः।। 1६।।

336.	**आशासते**	शासु इच्छायाम्*	सेट्[339]	–	–	–

लक्ष्मीः .... निरीक्षते।। 1७।।

337.	**निरीक्षते**	ईक्ष् दर्शने* (882)	–	–	अनिट्[340]	–

नाऽऽस्यं .... विहितेन्द्रियः।। 1९।।

338.	**पश्यति**	दृश् प्रेषणे* (495)	–	–	अनिट्[341]	–
339.	**निंस्ते**	णिसि चुम्बने* (1121)	–	–	अनिट्[342]	–
340.	**संश्रृणोति**	श्रु श्रवणे* (1296)	–	–	अनिट्[343]	–

सारः .... निमज्जथुम्।। २०।।

341.	**मन्ये**	मन ज्ञाने*(1263)	–	–	अनिट्[344]	–

न तं पश्यामि .... सुकृती भव।। २1।।

342.	**भवेत्**	भू सत्तायाम्* (1)	सेट्[345]	–	–	–
343.	**पश्यामि**	दृश् प्रेक्षणे* (495)	–	–	अनिट्[346]	–
344.	**भव**	भू सत्तायाम्* (1)	सेट्[347]	–	–	–
345.	**विन्दः**	विद् लाभे*(1322)	–	–	अनिट्[348]	–

प्रत्यूचे .... रावणो ह्यहम्।। २३

346.	**प्रत्यूचे**	ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि*(1125)	–	–	अनिट्[349]	–
347.	**आश्वसिहि**	श्वस प्राणने* (1090)	सेट्[350]	–	–	–
348.	**बिभेषि**	भाष् व्यक्तायां वाचि * (832)	सेट्[351]	–	–	–
349.	**त्यज**	त्यज हानौ* (172)	–	–	अनिट्[352]	–

मामुपास्त .... अनादरेक्षितः।। २४।।

350.	**उपास्त**	आस उपवेशने*(1119)	सेट्[353]	–	–	–

विरूग्णोदग्रधाराऽग्रः .... बली।। २५।।

351.	**मन्यसे**	मन ज्ञाने*(1263)	–	–	अनिट्[354]	–

कृत्या .... तृणवदत्यजम्।। २६।।

352.	**अत्यजम्**	त्यज् हानौ* (172)	–	–	अनिट्[355]	–

आहोपुरुषिकां .... सदा।। २७।।

353.	**पश्य**	दृश् प्रेक्षणे* (495)	–	–	अनिट्[356]	–

हृतरत्नः .... गोत्रभित्।। २८।।

354.	**अभ्येति**	इण् गतौ*(1075)	सेट्[357]	–	–	–

अतुल्यमहसा .... तद्विनिग्रहे।। २९।।

355.	**यतिष्ये**	यती प्रयत्ने*(711)	सेट्[358]	–	–	–

उपत्य .... चक्रमे।। ३०।।

356.	**चक्रमे**	क्रम गतौ*	–	–	अनिट्[359]	–

संपत्य .... दशाननः ।। ३1।।

357.	**अशिश्रवत्**	श्रु श्रवणे* (1296)	–	–	अनिट्[360]	–
358.	**अगादि**	गद् व्यक्तायां वाचि * (297)	सेट्[361]	–	–	–

अन्तर्धत्स्व .... दधद्धनु ।। ३२।।

359.	**अन्तर्धत्स्व**	डुधाय धारण पोषणयो* (1139)	–	–	अनिट्[362]	–

भवन्तं .... सार्वलौकिकम्।। ३३।।

360.	**अचीकरत्**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[363]	–
361.	**जिगाय**	जि जये* (8)	–	–	अनिट्[364]	–

यमाऽऽस्यदृश्वरी .... सिंहनर्दिना।। ३४।।

362.	**वेत्ति**	विद् ज्ञाने* (1099)	–	–	अनिट्[365]	–

न त्वं .... चाऽन्वभविष्यहम्।। ३५।।

363.	**अन्वभावि**	भू सत्तायाम्* (1)	सेट्[366]	–	–	–
364.	**अन्वभविषि**	भू सत्तायाम्* (1)	सेट्[367]	–	–	–
365.	**अन्वभाविष्ठाः**	भू सत्तायाम्* (1)	सेट्[368]	–	–	–

अध्यङ् .... धनुः।। ३६।।

366.	**अभनक्**	भञ्जो आमर्दने* (1486)	सेट्[369]	–	–	–

संवित्तः .... मखेषु सः।। ३७।।

367.	**संवित्तः**	विद् ज्ञाने* (1099)	सेट्[370]	–	–	–
368.	**अगोपीत्**	गुपू रक्षणे*	सेट्[371]	–	–	–

सुखजातः .... बलिविग्रहम्।। ३८।।

369.	**दीव्य**	दिवु क्रीडा विजिसादिषु*(1144)	सेट्[372]	–	–	–
370.	**मा आरब्धाः**	रभ् रामस्ये* (785)	–	सेट्[373]	–	–

तं .... किं ततः।। ३९।।

371.	**प्रत्यभाषत**	भाष व्यक्तायां वाचि * (832)	सेट्[374]	–	–	–

अघानि .... क्षुद्रमानसम्।। ४०।।

372.	**अघानि**	हन हिंसागत्यौ* (1100)	–	–	अनिट्[375]	–

यद् गेहे .... न तत्।।४1।।

373.	**अभाययत्**	ञिभी भये*(1132)	–	–	अनिट्[376]	–

वनतापसके .... खरदूषणौ।।४३।।

374.	**मम्रतुः**	मृङ्प्राणत्यागे*(1333)	–	–	अनिट्[377]	–

त्वं तु .... न सदाः।।४४।।

375.	**अपह्नुषे**	ह्नुङ अपनयने*	–	–[378]	–	–
376.	**स्तौषि**	ष्टुञ् स्तुतौ* (1124)	–	–	अनिट्[379]	–

शीर्षच्छेद्यमतोऽहं .... निजिधृक्षुर्वनौकसौ।।४५।।

377.	**करोमि**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[380]	–
378.	**कारयिष्यामि**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[381]	–

तमुद्यतनिशाताऽसि .... भवामि ते।।४६।।

379.	**भवामि**	भू सत्तायाम्* (1)	सेट्[382]	–	–	–
380.	**प्रत्युवाच**	ब्रूञ् वक्तायाम् वाचि * (1125)	–	–	अनिट्[383]	–

हरामि .... च सन्तनु।।४७।।

381.	**हरामि**	हृञ् हरणे*(885)	सेट्[384]	–	–	–
382.	**सन्तनु**	तनु विस्तारे*(1499)	सेट्[385]	–	–	–

ततश्चित्रीयमाणोऽसौ .... लोभयन्।।४८।।

383.	**पुप्लुवे**	प्लुङ्गतौ*(598)	–	–	अनिट्[386]	–

योगक्षेमकरं .... गजविक्रमः।।५०।।

384.	**जगाम**	गम्लृ गतौ* (896)	सेट्[387]	–	–	–

स्थायं .... विसिष्मिये।।५1।।

385.	**विसिष्मिये**	स्मिङ् ईषद्षने*	–	–	अनिट्[388]	–

चिरं .... क्षणदाचरम्।।५२।।

386.	**अव्यात्सीत्**	व्यध ताडने*(1157)	सेट्[389]	–	–	–

श्रुत्वा .... गन्तुमैजिहत्।।५३।।

387.	**ऐजिहतम्**	इण् गतौ* (1075)	–	–	अनिट्[390]	–

एष .... राघवम्।।५४।।

388.	**विरौति**	रू शब्दे*(1085)	सेट्[391]	–	–	–
389.	**कुरू**	डुकृञ् करणे* (888)	–	–	अनिट्[392]	–

रामसंघुषितं .... ताम्।।५५।।

390.	**अवदत्त**	वद व्यक्तायां वार्नि* (998)	सेट्[393]	–	–	–

देहं .... मुमूर्षया।।५७।।

391.	**आयात्**	या प्रापणे*(1062)	–	–	अनिट्[394]	–

शत्रून् .... पतिः।।५८।।

392.	**द्रक्ष्यते**	दृश प्रेक्षणे* (495)	–	–	–[395]	–
393.	**विस्मापयेत**	स्मये*	–	–	अनिट्[396]	–

याया .... तया।।५९।।

394.	**यायाः**	या प्रापणे*(1062)	–	–	अनिट्[397]	–
395.	**जगदे**	गद व्यक्तायां वाचि * (297)	सेट्[398]	–	–	–
396.	**उत्सहसे**	षह् मर्षणे*(990)	–	–	अनिट्[399]	–

मृषोद्यं .... शपन्वशी।।६०।।

397.	**यास्यासि**	या प्रापणे*(1062)	–	–	अनिट्[400]	–
398.	**निर्गात्**	गम्लृगतौ*(396)	सेट्[401]	–	–	–

सन्दिदर्शयिषुः .... सुखाभव।। ६४।।

399.	**ऊचे**	वच भाषणे*(1096)	–	–	अनिट्[402]	–

का त्वमेकाकिनी .... कथं न वा।। ६६।।

400.	**अघसन्**	अद् भक्षणे*(1059)	–	–	अनिट्[403]	–

हृदयङ्गममूर्तिः .... हेतुना।। ६७।।

401.	**वद**	वद व्यक्तायां वाचि * (998)	सेट्[404]	–	–	–
402.	**अभ्यै**	इण् गतौ*(1075)	–	–	अनिट्[405]	

सुकृतं .... सुरतेषु कः।। ६८।।

403.	**उपतिष्ठते**	स्थागतिनिवृतौ* (5)	–	–	अनिट्[406]	–

अपीतमधुक .... मतिः।। ७०।।

404.	**असि**	अस् भुवि*(1102)	–	–	अनिट्[407]	–

मिथ्यैव श्रीः .... श्रियः।। ७1।।

405.	**अभिमन्ये**	मन ज्ञाने* (1263)	–	–	अनिट्[408]	–

नोदकण्ठिष्यत .... वसेत्।। ७२।।

406.	**ऐक्षिष्यत्**	ईक्ष दर्शने*(882)	सेट्[409]	–	–	–
407.	**उदकण्ठिष्यत**	कठि शोके*(1958)	सेट्[410]	–	–	–
408.	**वसेत्**	वस निवासे*(999)	–	–	अनिट्[411]	–

वल्गूयन्तीं .... समोऽपि ते?।। ७३।।

409.	**मन्तूयति**	मन्तु रोषे*(1997)	सेट्[412]	–	–	–

कः पण्डितायमानः .... वनम्।। ७५।।

410.	**उवाच**	वच् भाषणे*(1096)	–	–	अनिट्[413]	–

अध्वरेषु .... वनम्।। ७९।।

411. **अभ्यागमत्** गम्लृ – – अनिट्[414] –
गतौ*(396)

पतत्रिकोष्टुजुष्टानि .... शेरते।। ८०।।

412. **शेरते** शीङ् – – अनिट्[415] –
स्वप्ने*(1105)

दीव्यमानं .... नाऽवगच्छसि।। ८1।।

413. **अवगच्छसि** गम्लृ – – अनिट्[416] –
गतौ*(396)

भ्रातरि .... वनम्।। ८२।।

414. **यातः** या – – अनिट्[417] –
प्रापणे*(1062)

अथ .... दशाननः।। ८३।।

415. अवादीत् वद् व्यक्तायां सेट्[418] – – –
वाचि*(998)

कृते .... राघवम्।। ८४।।

416. **मन्येत्** मन् – – अनिट्[419] –
ज्ञाने*(1263)

मत्पराक्रम .... हरिः।। ८६।।

417. **दरिद्राति** दरिद्रा सेट्[420] – – –
दुर्गतौ*(1092)

निर्लङ्को .... कारणम्? ।। ८७।।

418. **अध्यास्ते** आस – – अनिट्[421] –
उपवेशने*(1119)

भिन्ननौक .... निरूद्यतिः।। ८८।।

419. **आस्ते** आस – – अनिट्[422] –
उपवेशने*(1119)

आवासे .... मया सह।। ९०।।

420. **वस** वस – – अनिट्[423] –
निवासे*(999)

संगच्छ .... तमकिञ्चनम्।। ९1।।

421.	**संगच्छ**	गम्लृ गतौ*	–	–	अनिट्[424]	–
422.	**जहीहि**	ओहाक् त्यागे* (1131)	–	–	अनिट्[425]	–

अश्नीतपिबतीयन्ती .... वरमन्दिरे।। ९२।।

423.	**मोदस्व**	मुद हर्षे* (726)	–	–	अनिट्[426]	–

मा स्म .... भव।। ९३।।

424.	**भव**	भू सत्तायाम्*	सेट्[427]	–	–	–

उच्चै .... वदन्।। ९६।।

425.	**प्राप**	आप्*	–	–	अनिट्	–

द्विषन् .... मम् ।। ९७।।

426.	**मा भूः**	भू सत्तायाम्*	सेट्[428]	–	–	–

सतामरूष्करं .... खम्।। 1००।।

427.	**उत्पपात**	पत्लृ गतौ*(962)	सेट्[429]	–	–	–

धुन्वन् .... अयुध्यत्।। 1०1।।

428.	**अयुध्यत**	युध् सम्प्रहारे*(1260)	–	–	अनिट्[430]	–

न बिभाय .... न च।। 1०२।।

429.	**न बिभाय**	ञिभी भये*(1132)	–	–	अनिट्[431]	–
430.	**न जिह्राय**	ह्री लज्जायाम्*(1133)	–	–	अनिट्[432]	–

पिशाच .... ध्वजशालिनम्।। 1०३।।

431.	**बभञ्ज**	भञ्जो आमर्दने*(1486)	–	–	अनिट्	–

सन्त्रासयञ्चकाराऽरिं .... बाहुना।। 1०४।।

432.	**सन्त्रासयञ्चकार**	त्रसी उद्वेगे*	सेट्[434]	–	–	–
433.	**प्रिपाय**	प्रीञ् तृप्तिकान्त्योः* (1510)	–	–	अनिट्[435]	–

असीतो .... खगः ।। १०५ ।।

434.	**कामाञ्चक्रे**	कासु शब्द कुत्सायाम्*	सेट्[436]	–	–	–
435.	**बेभिदाञ्चक्रे**	भिदिर विदारणे*(1477)	–	–	अनिट्[437]	–

हन्तुं .... राक्षसः ।। १०६ ।।

436.	**ईहाञ्चक्राते**	ईह चेष्टायाम्*(857)	सेट्[438]	–	–	–
437.	**पलायाञ्चक्रे**	अय गतौ*(790)	सेट्[439]	–	–	–
438.	**दयाञ्चक्रे**	दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु*(799)	सेट्[440]	–	–	–

उपासाञ्चक्रिरे .... पतत्रिणः ।। १०७ ।।

439.	**उपासाञ्चक्रिरे**	आस उपवेशने*(1119)	सेट्[441]	–	–	–
440.	**लोलूयञ्चक्रे**	लूञ् छेदने*(1519)	सेट्[442]	–	–	–

प्रलुठितमवनौ .... रामकान्ताम् ।। १०८ ।।

441.	**अगात्**	इण् गतौ* (1075)	–	–	अनिट्[443]	–

३. तिङन्त क्रियापदो में धातुओं का आत्मनेपद-परस्मैपद, गण तथा सकर्मकाऽकर्मत्व का निर्णय

प्रथम सर्ग

तिङन्त क्रियापद	**गण**	**आत्मनेपदी**	**परस्मैपदी**	**उभयपदी**	**सकर्मक**	**अकर्मक**	**द्विकर्मक**	
			अभून्नृपः .... स्वयम् ।। 1 ।।					
अभूत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–	
उपागमत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–	
			सोऽध्यैष्ट .... न्यवधीदरींश्च ।। २ ।।					
अध्यैष्ट	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–	–
अयष्ट	भ्वादिगण	–		उभयपदी	सकर्मक	–	–	–
अपारीत्	जुहोत्यादिगण	–	परस्मैपदी		सकर्मक	–	–	–
व्यजेष्ट	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी		सकर्मक	–	–	–
सममंस्त	दिवादिगण	आत्मनेपदी	–		सकर्मक	–	–	–
न्यवधीत्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–	–
			वसुनि .... निरास्थत् ।। ३ ।।					
व्याकारीत्	तुदादिगण	–	परस्मैपदी	सकर्मक	–	–	–	–
अध्यवात्सीत्	भवादिगण	–		उभयपदी	सकर्मक	–		–

उपास्थित	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–	–
निरास्थत्	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–	–

पुण्यो .... वह्निरभिप्रणीतः ।। ४ ।।

जज्वाल	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	अकर्मक	–	–	–

स पुण्यकीर्तिः .... ब्रह्मभिरिद्धबोधैः ।। ५ ।।

अध्यास्त	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

अन्तर्निविष्टोज्ज्वलरत्नभासो .... गृहेभ्यः ।। ८ ।।

भान्ति	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

धर्म्यासु .... तिसृषूत्तमासु ।। ९ ।।

अभिरेमे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	अकर्मक	–	–

पुत्रीयता .... पुरमृष्यशृङ्गः ।। 1० ।।

आनायि	भ्वादिगण	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–	–

ऐहिष्टं .... सुताऽनुबन्धम् ।। 11 ।।

ऐहिष्ट	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–
व्यतानीत्	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

रक्षांसि .... नृपतेरमार्गीत् ।। 1२ ।।

निरास्थत्	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अयाक्षीत्	भ्वादिगण्	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
अहौषीत्	जुहोत्यादिगण		परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अमार्गीत्	चुरादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

निष्ठां गते .... सुपुत्रान् ।। 1३ ।।

प्राशुः	क्रयादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

कौसल्यया .... लक्ष्मणेन ।। 1४ ।।

असावि	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
अभूत	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
प्रासोष्ट	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

आर्चीद् .... वरिष्ठः ।। 1५ ।।

आर्चीत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
न्यषेधीत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
उपानेष्ट	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

वेदोऽङ्गवांस्तैरखिलोऽध्यगायि .... अध्यवात्सुः ।। 1६ ।।

अध्यगायि	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
उपायंसत	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अध्यवात्सुः	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

ततोऽभ्यगाद् .... मधुपर्कपाणि ।। 1७ ।।

अभ्यगात्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
आर्जिहत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

ऐषीः .... नृपस्तच्छिवमित्यवादीत् ।। 1८ ।।

ऐषीः	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अबुद्धाः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अवादीत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
न्यवृतत्	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

आख्यन्मुनिस्तस्यशिवं .... लक्ष्मणेन ।। 1९ ।।

आख्यत्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
विघ्नन्ति	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
तृणेढु	रूधादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

स .... वचस्तापसकुञ्जरेण ।। २० ।।

मुमोह	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
ऊचे	अदादिगण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–

मया .... स्वसूनुम् ।। २1 ।।

आप्थाः	स्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–
मा कृत्था	तनादिगण	–	–	उभयपदी	–	–	–
आप्स्महिक	स्वादिगण	–	परसम्पदी	–	–	सकर्मक	–
प्रहिणु	स्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

घानिष्यते .... भारमग्रयम् ।। २२ ।।

स्थायिष्यते	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–
घानिष्यते	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–
मा परिभूः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
न्यस्यति	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–

क्रुध्यन्कुलं .... सुतस्य ।। २३ ।।

धक्ष्यति	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अवालुलोचे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
अनुजज्ञे	क्रयादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
तप्स्यति	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–

आशीर्भिरभ्यर्च्यं .... कुमारः।। २४।।

प्रतस्थे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–
इयाय	अदादिगण		–	–	–	अकर्मक	–

प्रयाष्यतः .... लक्ष्मणोऽभूत्।। २५।।

अभूत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

इषुमति .... रूदन्माङ्गलिक्यः।। २६।।

मा रूदन्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–

अथ .... पक्षिणाश्चाऽनुकूलाः।। २७।।

जगदूः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
आजघ्नुः	अदादिगण	–	परसमैपदी	–	सकर्मक	–	–
फुस्फोर	तुदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
चुकुवुः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–

द्वितीय सर्ग

वनस्पतीनां .... ददर्श।। 1।।

ददर्श	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

तरङ्गसङ्गाच्चपलैः .... षट्पदानि।। २।।

रेजुः	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	–	अकर्मक	–

बिम्बागतैस्तीरवनैः .... स्थलपद्महासैः।। ३।।

तेनुः	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	–	अकर्मक	–

निशातुषारै .... तीरतरूर्दिनादौ।। ४।।

उपारूरोद	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

वनानि .... लक्ष्मीमालोकयाञ्चक्रुरिवादरेण।। ५।।

आलोकयाञ्चक्रुः	चुरादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक्	–	–

प्रभातवात .... अन्यसङ्गमम्।। ६।।

निरास	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
संसहते	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–

दत्तावधानं .... मृगावित्।। ७।।

दधे	जुहोत्यादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

गिरेर्नितम्बे .... लक्ष्मीम्।।८।।

अनुचकार	तनादिगण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–

गर्जन् हरिः .... मृगेन्द्रनादान्।।९।।

बबन्ध	क्रयादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

अदृक्षताऽम्भांसि .... व्यतिषङ्गवांश्च।।10।।

अदृक्षत	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अश्रोषत	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
आघ्रायि	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

लताऽनुपातं .... आस्त।।11।।

अगृह्णात्	क्रयादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
उपास्पृशत्	तुदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
आस्त	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	अकर्मक	–	–

तिग्मांशुरश्मि .... संभृतानि।।1२।।

अपश्यत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

दिव्यापिनीः .... वितृणाऽन्तरालाः।।1३।।

तुतोषः	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–

वियोगदुःखाऽनुभव .... गोष्ठान्।।1४।।

ऐक्षिष्ट	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

स्त्रीभूषणं .... विलोक्य।।1५।।

मुमुदे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	अकर्मक	–	–

विवृत्तपार्श्वं .... अनन्दयत्तम्।।1६।।

अनन्दयत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–

विचित्रमुच्चैः .... मृगाणाम्।।1७।।

ततान	तनादिगण	–	–	–	सकर्मक	–	–

सितारविन्दप्रचयेषु .... श्रोत्रसुखैर्निनादैः।।1८।।

प्रतीयिरे	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	अकर्मक	–	–

न तज्जलं .... यन्मनः।।1९।।

जहार	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

तं यायजूकाः .... जगदर्चनीयम् ।। २० ।।

प्रानर्चुः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

विद्यामथैनं .... यातुधानान् ।। २1 ।।

अध्यापिपत्	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

आयोधने .... श्रेयसि जागरूक ।। २२ ।।

ददौ	अदादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

तं विप्रदर्शं .... निजघान रामः ।। २३ ।।

डुढौके	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
निजधान	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

अथाऽऽलुलोके .... चारूपतत्त्रिशिञ्जम् ।। २४ ।।

आलुलोके	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

क्षुद्रान्न .... लता विलोलाः ।। २५ ।।

जक्षुः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–
विशश्वसे	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
चकाशिरे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–

अपूपुजन .... क्षितिपालपुत्रौ ।। २६ ।।

अपूपुजन्	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	सकर्मक	–
प्रत्यग्रहीष्टाम्	क्रयादिगण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–

दैत्याऽभिभूतस्य .... अभाषिषाताम् ।। २७ ।।

अवोढम्	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
रक्षतम्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अभाषिषाताम्	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	द्विकर्मक	–

तान् प्रत्यवादीदभ .... नोऽरिसमिन्धनेषु ।। २८ ।।

प्रत्यवादीत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	द्विकर्मक
प्रस्तुत	अदादिगण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–
संधुक्ष्यताम्	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	सकर्मक	–

प्रतुष्टुवुः कर्म .... प्रसर्पत् ।। २९ ।।

प्रतुष्टुवुः	अदादिगण	–	–	–	–	सकर्मक	–
चिचिते	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	द्विकर्मक	–

अपिङ्गरूक्षोर्ध्व .... चाऽऽनशेऽब्दैः ।। ३० ।।

आनशे	स्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

अधिज्यचापः .... शुद्धेषुरमन्दकर्षी।। ३1।।

जघान	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

गाधेयदिष्टं .... महार्थम्।। ३२।।

जगाद	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–

आत्मम्भरिस्त्वं .... न कस्मात्।। ३३।।

दयसे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
हंसि	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
व्रजन्ति	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

अद्मो द्विजान् .... वेदवृत्ते।। ३४।।

अदमः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
निहन्मः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	–
कूर्मः	तनादिगण	–		उभयपदी	सकर्मक	–	–
अध्यकारिष्महि	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

धर्मोऽस्ति .... धर्तकार्मुकेषुः।। ३५।।

अस्ति	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–
व्यतिस्ते	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–
प्रणिहन्मि	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

इत्थंप्रवादं .... प्रधनान्निरास्थत्।। ३६।।

प्रचक्रतुः	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
निरास्थत्	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–

जग्मुः प्रसादं .... मुनिना कुमार।। ३७।।

जग्मुः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
बभूव	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–
ववृते	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
बभाषे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	द्विकर्मक	–	–

महीय्यमाना .... न भूमिः।। ३८।।

हृणीयते	कण्डवादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

बलिबर्बबन्धे .... गुरूर्न तस्य।। ३९।।

बबन्धे	क्रयादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
ममन्थे	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	द्विकर्मक
विजिग्ये	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	द्विकर्मक
ऊहे	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	–	–	–

इति ब्रुवाणो .... निजिघृक्षयिष्यन् ।। ४० ।।

आञ्जिहत्	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

इतः स्म .... नृसिंहौ ।। ४1 ।।

इतः स्म	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
औंजिहताम्	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

अजिग्रहत्तं .... रघुनन्दनस्तत् ।। ४२ ।।

अजिग्रहत्त	क्रयादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
आर्दिदत	चुरादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
अभाङ्क्षीत्	रूधादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

ततो नदीष्णान् .... मैथिलमर्त्यमुख्यः ।। ४३ ।।

व्यसर्जयत्	दिवादिगण	आत्मनेपदी	–	–	अकर्मक	–	–

क्षिप्रं .... मिथिलामगच्छत् ।। ४४ ।।

अगच्छत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

वृन्दिष्ठं .... वरिष्ठम् ।। ४५ ।।

आर्चीत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

त्रिवर्गपारीणमसौ .... बभाषे ।। ४६ ।।

अगात्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
बभाषे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

हिरण्मयी शाललतेव .... मैथिली ।। ४७ ।।

ददे	जुहोत्यादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

लब्धां ततो .... रघुवर्ग्यलक्ष्मीम् ।। ४८ ।।

उदवोढ	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

सुप्रातम् .... बलमध्वनीनम् ।। ४९ ।।

अगात्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

विशङ्कटो .... जामदग्न्यः ।। ५० ।।

ऐतिस्म	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

उच्चैरसौ .... अनुनिनीषुरूचे ।। ५1 ।।

आह्वत	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
कुरू	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

मा अतियासी	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–
ऊचे	अदादिगण	–	–	उभयपदी	द्विकर्मक	–	–

अनेकशो .... राम! रामे ।।५२।।

अतार्प्सीः	स्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–
संक्षिप्य	दिवादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

अजीगणत् .... तस्य।।५३।।

अजीगणत्	चुरादिगण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–
व्यकार्क्षीत्	तुदादीगण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–
अलावीत्	क्रयादीगण	–	–	उभयपदी	–	अकर्मक	–

जिते नृपाऽरौ .... मार्गान्।।५४।।

जगाहिरे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	सकर्मक	–

अथ .... तूर्णमायादयोध्याम्।।५५।।

आयात्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–

तृतीय सर्ग

वधेन.. नाऽऽसीत्।।1।।

आसीत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

ततः .... समनीचकार।।२।।

अभिषेक्ष्ये	तुदागिण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–
सुमनीचकार	क्रयादिगण	–	–	–	–	सकर्मक	–

आदिक्षत् .... महार्धरत्नम्।।३।।

आदिक्षत्	तुदादीगण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–

प्रास्थापयत् .... तीर्थजलाऽर्थमाशु।।४।।

प्रास्थापयत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

उक्षाम्प्रचक्रुः .... नियुक्ताः।।५।।

उक्षाम्प्रचक्रुः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
बबन्धुः	क्रयादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
मुमुचुः	चुरादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
चकरूः	तुदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

मातामहा .... वनप्रयाणम्।।६।।

बवार	स्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

कर्णेजपैः .... सनरेन्द्रमृत्युम् ।। ७ ।।

व्यमृशत्	तुदादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–

वसुनि .... निचख्ने ।। ८ ।।

अवाज्ञे	क्रयादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
निचख्ने	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

ततः प्रविव्राजयिषुः .... शोचन् ।। ९ ।।

आदिक्षत्	तुदादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

केचित् .... जगाद ।। 1० ।।

निनिन्दः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
विचुक्रुशुः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
ऊचुः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	द्विकर्मक	–	–
जगाद	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	द्विकर्मक	–	–

गतो वनं .... मनांसि ।। 11 ।।

भविता	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
देहे	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

प्रस्थास्यमानावुपसेदुषस्तौ .... कृताऽर्थान् ।। 1२ ।।

ऊचतः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	द्विकर्मक	–
शोचत	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

असृष्ट यो यश्च .... वनस्य मोक्षः ।। 1३ ।।

असृष्ट	दिवादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	सकर्मक	–
अरक्षीत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–
अपुषत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
अस्ति	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

विद्युत्प्रणाशं .... गुरुणाम् ।। 1४ ।।

अवास्थित	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–

पौरा निवर्तध्वमिति .... स्मः सूतम् ।। 1५ ।।

निवर्तध्वम्	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–
भवेत्	भ्वादिगण्	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
मा दर्शत्	भ्वादिगण्	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–
न्यगादीत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–
निवर्तय	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	सकर्मक	–

ज्ञात्वेङ्गितै .... अपजगाम रामः ।। 1६ ।।

अपजगामः	भ्वादिगण	–	परसमैपदी	–	सकर्मक	–	–

अस्त्राक्षुरस्त्रं .... न्यवृतन्मनोभिः ।। 1७ ।।

अस्त्राक्षुः	तुदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
न्यश्वसिषु	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

सूतोऽपि गङ्गासलिलै .... पुरमाविवेश ।। 1८ ।।

आविवेश	तुदादीगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

प्रतीय सा .... सर्वचेष्टा ।। 1९ ।।

ददृशे	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–

विलोक्य .... वस्त्रे ।। २० ।।

अच्योष्ट	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
ऐषीत्	तुदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–
व्यलिप्त	तुदादिगण	–	–	उभयपदी	–	अकर्मक	–
व्यवसिष्ट	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–

आसिष्ट नैकत्र .... द्युनिवासभूयम् ।। २1 ।।

आसिष्ट	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–
वयरंसीत्	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
अगात्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–

विचक्रुशुर्भूमि .... चैव ।। २२ ।।

विचुक्रुशुः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–
लुलुञ्चुः	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–
पेतूः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–
बभञ्जुः	रूधादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–
उन्मुमुचुः	तुदादिगण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–
जघ्नुः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	सकर्मक	–

ताः सान्त्वयन्ती .... यूनः ।। २३ ।।

न्यक्षिपत्	तुदादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
प्रास्थापयत्	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

सुप्तो नभस्तः .... राज्ञः ।। २४ ।।

निरीक्षाञ्चक्रे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
आख्यत्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

अशिश्रवन् .... गुरूणाम् ।। २५ ।।

आंहिष्ट	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

बन्धूनशङ्किष्ट .... अरासिषुश्च।। २६।।

अयासिषुः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–
अरासिषु	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	अकर्मक	–	–

स प्रोषिवानेत्य .... पणाऽऽयान्।। २७।।

शुश्राव	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
उपलेभे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

चक्रन्दुः .... प्रतिपूर्णमन्या।। २८।।

चक्रन्दुः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

दिदृक्षमाणः .... वृत्तमस्मै।। २९।।

ऐक्षत	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
अपृच्छत्	तुदादिगण	–	परस्मैपदी	–	द्विकर्मक	–	–
आख्यन्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

आबद्धभीम .... न्यमाङ्क्षीत्।। ३०।।

उपालब्ध	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
न्यमाङ्क्षीत्	तुदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

नृपाऽत्मजौ .... बह्वनर्थम्।। ३1।।

चिक्लिशतुः	दिवादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
ममार	तुदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	अकर्मक	–	–

नैतन्मतं मत्कमिति .... रोरूदावान्।। ३२।।

अशप्यत्	दिवादिगण	–	–	उभयपदी	–	अकर्मक	–

तं सुस्थयन्तः .... अध्वरपात्रजातम्।। ३३।।

समदूहुः	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

श्रोत्राक्षिनासावदनं .... चिताग्निम्।। ३५।।

जुहाव	जुहोत्यादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

कृतेषु .... सपौरः।। ३६।।

प्रायात-	अदादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

शीघ्रायमाणैः .... रथाश्वमिश्रैः।। ३७।।

चकासाञ्चकार	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

उच्चिक्यिरे .... विशश्रमुश्च।। ३८ ।।

उच्चिक्यिरे	स्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
सस्नुः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
पिप्रियः	क्रयादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
आरेटुः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
विशश्रमुः	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

सम्प्राप्य तीरं .... श्रमवृत्तयस्ते।। ३९ ।।

ययुः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक		

ईयु .... पयोभिः।। ४० ।।

व्यास्यन्	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
ईयुः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
विशश्राम	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

वाचंयमान .... सशिष्यम्।। ४1 ।।

प्रणेमुः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

आतिथ्यमेभ्यः .... द्राघिमवत्युदूहुः।। ४२ ।।

उदूहुः	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

आज्ञां .... वनिताश्च तस्मिन्।। ४३ ।।

प्रतीषुः	तुदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
उपास्थुः	–	–	–	–	–	अकर्मक	–
जगुः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
ननृतुः	दिवादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–
नेमुः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
ऊचुः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

वस्त्राऽन्नपानं .... शेध्वम्।। ४४ ।।

निवदध्वम्	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
आदध्वम्	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
पिबत	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अत्त	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
शेध्वम	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–

ते भुक्तवन्तः .... समीयुः।। ४५ ।।

समीयुः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

वैखानसेभ्य .... चित्रकूटम्।। ४६ ।।

आनहिरे	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	–

शुक्लोत्तरा .... स्ववर्ग्यान्।।४८।।

औहिष्ट	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

समूलकाषं .... रामवियोगशोकात्।।४९।।

चकषुः	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

अरण्ययाने .... कनीयान्।।५1।।

प्रायुङ्क्तः	रूधादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–
वह	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
आभाषि	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	–	द्विकर्मक

कृती श्रुती .... पुत्रकाम्या।।५२।।

स्यात्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

अस्माकमुक्तं .... पृथ्वीम्।।५३।।

मन्यसे	दिवादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
ईशिषे	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
जिह्रेषि	जुहोत्यादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
जहीहि	जुहोत्यादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
शाधि	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
व्रज	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

वृद्धौरसां .... धर्म्यम्।।५४।।

प्रयुक्थाः	रूधादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–
प्राहस्म	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	द्विकर्मक

उर्जस्वलम् .... शान्तमेतत्।।५५।।

स्याम्	अदादिगण	–	परसमैपदी	–	–	अकर्मक	–

इति निगदितवन्तं .... कारकयाऽस्मन्मतेन।।५६।।

जगाद	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
व्रज	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
कारय	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

चतुर्थ सर्ग

निवृत्ते .... ईयिवान्।।1।।

प्रपेदे	दिवादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

अटाट्यमानः .... रक्षसा।।२।।

जहे	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

अवाक्शिरसम् .... निचख्नतुः ।। ३ ।।

निचख्नतुः	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

आंहिषातां .... शरणैषिणाम् ।। ४ ।।

आंहिषाताम्	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

पुरो रामस्य .... मुनिकेतनम् ।। ५ ।।

जुहवाञ्चकार	जुहोत्यादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

यूयं .... गतिम् ।। ६ ।।

समैष्यश	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
आसिष्महि	अदादिगण	आत्मनेपदी		–	सकर्मक	–	–
स्थ	अदादिगण		परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
यामः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

तस्मिन् .... आश्रमान् ।। ७ ।।

उवास	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	–	अकर्मक	–

वनेषु .... विचक्रमे ।। ८ ।।

विचक्रमे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

ऋग्यजुषम् .... होमवान् ।। ९ ।।

बुभुजे	रूधादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

हित्वाऽशित .... निर्भयः ।। 11 ।।

आनभ्र	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

व्रातीनव्यालदीप्राऽस्त्रः .... नैकटिकाश्रमान् ।। 1२ ।।

आट	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

परेद्यव्यद्य .... प्रियम्भावुकतामगात् ।। 1४ ।।

अगात्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

ददृशे .... सौमित्रयेऽसकौ ।। 1५ ।।

ददृशे	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

तामुवाच .... अरार्यसे ।। २1 ।।

उवाच	अदादिगण	–	–	उभयपदी	–	–	द्विकर्मक
अरार्यसे	जुहोत्यादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–

मानुषानाभिलष्यन्ती .... कथमञ्चसि।। २२।।

अञ्चसि	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

राघवं .... औपकर्णिकलोचन।। २४।।

इच्छ्	तुदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

बद्धा .... धतेऽन्यदुर्वहम्।। २६।।

धत्ते	जुहोत्यादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

ततो वावृत्यमानाऽसौ .... वचः।। २८।।

न्यविक्षत	तुदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

अस्त्रीकः .... मा मुचः।। २९।।

व्रज	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
मुचः	तुदादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
अब्रवीत्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	द्विकर्मक

लक्ष्मणं सा .... पुनः।। ३०।।

अगमत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

अहं शूर्पणखा .... साऽब्रवीत्।। ३२।।

अज्ञायिषि	क्रयादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अपाति	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अब्रवीत्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

पर्यशाप्सीत् .... मुहुः।। ३३।।

पर्यशाप्सीत्	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	–	अकर्मक	–
अपिस्फवत्	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

खरदूषणयोः .... दण्डकारण्यवासिनम।। ३४।।

पर्यदेविष्ट	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

कृते सौभागिनेयस्य .... तयोः।। ३५।।

पश्यतम्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

मम रावणनाथाया .... क्षमम्।। ३६।।

क्षमध्वम्	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

असंस्कृत्रिम .... माम्।। ३७।।

मापर्यभूताम्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

श्वः श्रेयसम् .... मा रूदः।। ३८।।

अवाप्तासि	स्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
प्राणिवः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
आश्वसिहिं	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
मा रूदः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

जक्षिमः .... क्षमामहे।। ३९।।

जक्षिमः	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
क्षमामहे	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

तौ चतुर्दश .... अन्वितौ।। ४०।।

निर्ययतुः	अदादीगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

अर्थ .... मृधे।। ४1।।

अहताम्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

तै .... मेदिनी।। ४२।।

पप्रे	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

मृगयुमिव .... पतात्त्रिराजम्।7 ४४।।

उपाययौ	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

शितविशिखनिकृत .... लिङ्गतुल्य।। ४५।।

उपनिदधे	जुहोत्यादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

पञ्चम सर्ग

निराकरिष्णू .... खरदूषणौ।।1।।

चेरतु	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

तौ .... इणे।। २।।

अकार्ष्टाम्	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

अथ .... यमसाञ्चक्रतुर्द्विषौ।। ३।।

चक्रतुः	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

हतबन्धुः .... पतिम्।। ४।।

जगाम	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

सम्प्राप्य .... रावणाऽन्तिके।। ५।।

अरोदीत्	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

दण्डकान् .... भूमिवर्धनों ।। ६ ।।

अध्यवात्ताम्	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–
अकृषाताम्	तुदादिगण	–	–	उभयपदी	–	सकर्मक	–

विग्रहस्तव .... नयः ।। ७ ।।

असि	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

यद्यहं .... दुर्बलः ।। ८ ।।

आयास्यत	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अज्ञास्यः	–	–	–	–	सकर्मक	–	–

अध्वरेषु .... अधुना ।। 11 ।।

ऐति	–	–	–	–	सकर्मक	–	–

आमिक्षीयं .... राक्षसाः ।। 1२ ।।

उपध्वनन्ति	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

युवजानिः .... शिलीमुखैः ।। 1३ ।।

हन्यन्ते	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

मांसानि .... दिशः ।। 1४ ।।

अश्नन्ति	क्रयादिगण	–	–	–	सकर्मक	–	–
बिभ्यति	जुहोत्यादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
अश्नुवते	क्रयादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

कुरू बुद्धिं .... नय ।। 1५ ।।

त्यज	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
कुरू	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
नय	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

सहायवन्त .... मा श्वसीः ।। 1६ ।।

आशासते	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–
मा श्वसीः	–	–	–	–	–	–	–

लक्ष्मीः .... निरीक्षते ।। 1७ ।।

निरीक्षते	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

नाऽऽस्यं .... विहितेन्द्रियः ।। 1९ ।।

पश्यति	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
निंस्ते	–	–	–	–	सकर्मक	–	–

संशृणोति	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

सारः .... निमज्जयुम्।। २०।।

मन्ये	दिवादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

न तं पश्यामि .... सुकृती भव।। २1।।

भवेत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
पश्यामि	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
भव	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

प्रत्यूचे .... रावणो ह्यहम्।। २३

प्रत्यूचे	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	द्विकर्मक
आश्वसिहि	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
विभेषि	भ्वादिगण	–	आत्मनेपदी	–	सकर्मक	–	–
त्यज्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

मामुपास्त .... अनादरेक्षितः।। २४।।

उपास्त	अदादीगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–

विरूग्णोदग्रधाराऽग्रः .... बली।। २५।।

मन्यसे	दिवादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

कृत्या .... तृणवदत्यजम्।। २६।।

अत्यजम्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

आहोपुरुषिकां .... सदा।। २७।।

पश्य	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

हृतरत्नः .... गोत्रभित्।। २८।।

अभ्येति	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

अतुल्यमहसा .... तद्विनिग्रहे।। २९।।

यतिष्ये	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–

उपत्य .... चक्रमे।। ३०।।

चक्रमे	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

संपत्य .... दशाननः ।। ३1।।

अशिश्रवत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
अगादि	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	द्विकर्मक

भवन्तं .... सार्वलौकिकम् ।। ३३ ।।

अचीकरत्	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
जिगाय	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

न त्वं .... चाऽन्वभविष्यहम् ।। ३५ ।।

अन्वभावि	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
अन्वभविषि	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
अन्वभाविष्ठाः	परस्मैपदी	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

अध्यङ्‌ .... धनुः ।। ३६ ।।

अभनक्	रूधादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

संवित्तः .... मखेषु सः ।। ३७ ।।

अगोपीत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

सुखजातः .... बलिविग्रहम् ।। ३८ ।।

दीव्य	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

तं .... किं ततः ।। ३९ ।।

प्रत्यभाष्यत	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

अघानि .... क्षुद्रमानसम् ।। ४० ।।

अघानि	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

यद् गेहे .... न तत् ।। ४1 ।।

अभाययत्	जुहोत्यादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

वनतापसके .... खरदूषणौ ।। ४३ ।।

मम्रतुः	तुदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–

त्वं तु .... न सदाः ।। ४४ ।।

अपह्नुषे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
स्तौषि	अदादिगण	–	–	उभयपदी	–	–	–

शीर्षच्छेद्यमृतोऽहं .... निजिधृक्षुर्वनौकसौ ।। ४५ ।।

करोमि	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
कारयिष्यामि	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

तमुद्यतनिशाताऽसि .... भवामि ते।। ४६।।

भवामि	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
प्रत्युवाच	अदादिगण	–	–	उभयपदी	–	–	द्विकर्मक

हरामि .... च सन्तनु।। ४७।।

सन्तनु	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

ततश्चित्रीयमाणोऽसौ .... लोभयन्।। ४८।।

पुप्लुवे	–	–	–	–	सकर्मक	–	–

योगक्षेमकरं .... गजविक्रमः।। ५०।।

जगाम	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

चिरं .... क्षणदाचरम्।। ५२।।

अव्यात्सीत्	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–

एष .... राघवम्।। ५४।।

कुरू	तनादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

रामसंघुषितं .... ताम्।। ५५।।

अवदत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	द्विकर्मक

देहं .... मुमूर्षया।। ५७।।

आयात्	अदादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

यायास्त्वमिति .... तया।। ५९।।

यायाः	अदादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–
जगदे	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

मृषोद्यं .... शपन्वशी।। ६०।।

यास्यसि	अदादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

सन्द्दिदर्शयिषुः .... सुखाभव।। ६४।।

ऊचे	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	द्विकर्मक

हृदयङ्गममूर्तिः .... हेतुना।। ६७।।

वद्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	द्विकर्मक

सुकृतं .... सुरतेषु कः।। ६८।।

उपतिष्ठते	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

मिथ्यैव श्रीः .... श्रियः।।७४।।

अभिमन्ये	दिवादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

नोदकण्ठिष्यत .... वसेत्।।७२।।

ऐक्षिश्यत	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
उद्कण्ठिष्यत	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	–	अकर्मक	–
वसेत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

वल्गूयन्तीं .... समोऽपि ते?।।७३।।

मन्तूयति	कण्डवादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

कः पण्डितायमानः .... वनम्।।७५।।

उवाच	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	–	द्विकर्मक

अध्वरेषु .... वनम्।।७९।।

अभ्यागमत्	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

दीव्यमानं .... नाऽवगच्छसि।।८1।।

अवगच्छसि	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

भ्रातरि .... वनम्।।८२।।

यातः	अदादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

मत्पराक्रम .... हरिः।।८६।।

दरिद्राति	अदादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

निर्लङ्को .... कारणम्? ।।८७।।

अध्यास्ते	अदादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

भिन्ननौक .... निरूद्यतिः।।८८।।

आस्ते	अदादिगण	–	–	उभयपदी	–	अकर्मक	–

आवासे .... मया सह।।९०।।

वस	भ्वादिगण	–	–	उभयपदी	–	अकर्मक	–

संगच्छ .... तमकिञ्चनम्।।९1।।

संगच्छ	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

मा स्म .... भव।।९३।।

मा स्म भूः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

भव	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

द्विषन् .... मम् ।।९७।।

मा भूः	भ्वादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–

धुन्वन् .... अयुध्यत्।।101।।

अयुध्यत	दिवादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

न बिभाय .... न च।।१०२।।

न विभाय	जुहोत्यादिगण	–	परस्मैपदी	–	–	अकर्मक	–
न जिह्वाय	जुहोत्यादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–

पिशाच .... ध्वजशालिनम्।।१०३।।

बभञ्ज	–	–	–	–	–	–	–

सन्त्रासयञ्चकाराऽरिं .... बाहुना।।१०४।।

सन्त्रासयाञ्चकार	दिवादिगण	–	परस्मैपदी	–	सकर्मक	–	–
प्रिपाय	क्रयादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

असीता .... खगः।।१०५।।

कामाञ्चक्रे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
बेभिदाञ्चक्रे	रूधादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

हन्तुं .... राक्षसः।।१०६।।

ईहाञ्चक्राते	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
पलायञ्चक्रे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
दयाञ्चक्रे	भ्वादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–

उपासाञ्चक्रिरे .... पतत्त्रिणः।।१०७।।

उपासाञ्चक्रिरे	अदादिगण	आत्मनेपदी	–	–	सकर्मक	–	–
लोलूयञ्चक्रे	क्रयादिगण	–	–	उभयपदी	सकर्मक	–	–

प्रलुठितभवनौ .... रामकान्ताम्।।१०८।।

अगात्	–	–	–	–	सकर्मक	–	–

संदर्भ सूची

1. धातुरत्नाकर – मुनिश्रीवावण्यविजयसूरि निर्मित – धातु रत्नाकर भाग–1–सम्पादक –ओमनाथ बिमली, परिमल पब्लिकेशन्स, पृष्ठ संख्या–571
2. वही, पृष्ठ संख्या 581
3. वही, पृष्ठ संख्या 601
4. वही, पृष्ठ संख्या 598
5. वही, पृष्ठ संख्या 602
6. वही, पृष्ठ संख्या 570
7. वही, पृष्ठ संख्या 606
8. वही, पृष्ठ संख्या 601
9. वही, पृष्ठ संख्या 608
10. वही, पृष्ठ संख्या 598
11. वही, पृष्ठ संख्या 570
12. वही, पृष्ठ संख्या 605
13. वही, पृष्ठ संख्या 597
14. वही, पृष्ठ संख्या 601
15. वही, पृष्ठ संख्या 600
16. वही, पृष्ठ संख्या 598
17. वही, पृष्ठ संख्या 594
18. वही, पृष्ठ संख्या 593
19. वही, पृष्ठ संख्या 613
20. वही, पृष्ठ संख्या 606
21. वही, पृष्ठ संख्या 598
22. वही, पृष्ठ संख्या 602
23. वही, पृष्ठ संख्या
24. वही, पृष्ठ संख्या 615
25.
26. वही, पृष्ठ संख्या 571
27. वही, पृष्ठ संख्या 605
28. वही, पृष्ठ संख्या 573
29.
30. वही, पृष्ठ संख्या 594
31. वही, पृष्ठ संख्या 601
32. वही, पृष्ठ संख्या 580
33. वही, पृष्ठ संख्या 598
34. वही, पृष्ठ संख्या 600
35. वही, पृष्ठ संख्या 585
36. वही, पृष्ठ संख्या 603
37. वही, पृष्ठ संख्या 597
38. वही, पृष्ठ संख्या 598
39. वही, पृष्ठ संख्या 596
40. वही, पृष्ठ संख्या 600
41. वही, पृष्ठ संख्या 601
42. वही, पृष्ठ संख्या 612
43. वही, पृष्ठ संख्या 605
44. वही, पृष्ठ संख्या 602
45. वही, पृष्ठ संख्या 607

46. वही, पृष्ठ संख्या 594
47. वही, पृष्ठ संख्या 607
48. वही, पृष्ठ संख्या 607
49. वही, पृष्ठ संख्या 571
50. वही, पृष्ठ संख्या 601
51. वही, पृष्ठ संख्या 571
52. वही, पृष्ठ संख्या 602
53. वही, पृष्ठ संख्या 584
54. वही, पृष्ठ संख्या 587
55. वही, पृष्ठ संख्या 614
56. वही, पृष्ठ संख्या 579
57. वही, पृष्ठ संख्या 571
58. वही, पृष्ठ संख्या 600
59. वही, पृष्ठ संख्या 571
60. वही, पृष्ठ संख्या 601
61. वही, पृष्ठ संख्या 578
62. वही, पृष्ठ संख्या 601
63. वही, पृष्ठस संख्या 612
64. वही, पृष्ठ संख्या 612
65. वही, पृष्ठ संख्या 583
66. वही, पृष्ठ संख्या 594
67. वही, पृष्ठ संख्या 613
68. वही, पृष्ठ संख्या 601
69. वही, पृष्ठ संख्या 595
70. वही, पृष्ठ संख्या 605
71. वही, पृष्ठ संख्या 598
72. वही, पृष्ठ संख्या 602
73. वही, पृष्ठ संख्या 594
74. वही, पृष्ठ संख्या 615
75. वही, पृष्ठ संख्या 583
76. वही, पृष्ठ संख्या 607
77.
78. वही, पृष्ठ संख्या 614
79. वही, पृष्ठ संख्या 610
80. वही, पृष्ठ संख्या 601
81. वही, पृष्ठ संख्या 583
82.
83. वही, पृष्ठ संख्या 594
84. वही, पृष्ठ संख्या 589
85. वही, पृष्ठ संख्या 621
86. वही, पृष्ठ संख्या 613
87. वही, पृष्ठ संख्या 600
88. वही, पृष्ठ संख्या 594
89. वही, पृष्ठ संख्या 573
90. वही, पृष्ठ संख्या 601
91. वही, पृष्ठ संख्या 602
92. वही, पृष्ठ संख्या 586

93. वही, पृष्ठ संख्या 601
94. वही, पृष्ठ संख्या 595
95. वही, पृष्ठ संख्या 600
96. वही, पृष्ठ संख्या 601
97. वही, पृष्ठ संख्या 601
98. वही, पृष्ठ संख्या 615
99. वही, पृष्ठ संख्या 613
100. वही, पृष्ठ संख्या 598
101. वही, पृष्ठ संख्या 585
102. वही, पृष्ठ संख्या 593
103. वही, पृष्ठ संख्या 598
104. वही, पृष्ठ संख्या 602
105.
106. वही, पृष्ठ संख्या 602
107.
108. वही, पृष्ठ संख्या 608
109. वही, पृष्ठ संख्या 601
110. वही, पृष्ठ संख्या 578
111. वही, पृष्ठ संख्या 592
112. वही, पृष्ठ संख्या 601
113. वही, पृष्ठ संख्या 574
114. वही, पृष्ठ संख्या 600
115. वही, पृष्ठ संख्या 601
116. वही, पृष्ठ संख्या 594
117. वही, पृष्ठ संख्या 594
118. वही, पृष्ठ संख्या 601
119. वही, पृष्ठ संख्या 601
120. वही, पृष्ठ संख्या 601
121. वही, पृष्ठ संख्या 594
122. वही, पृष्ठ संख्या 605
123. वही, पृष्ठ संख्या 598
124. वही, पृष्ठ संख्या 571
125. वही, पृष्ठ संख्या 596
126. वही, पृष्ठ संख्या 593
127. वही, पृष्ठ संख्या 602
128. वही, पृष्ठ संख्या 615
129. वही, पृष्ठ संख्या 614
130. वही, पृष्ठ संख्या 598
131. वही, पृष्ठ संख्या 598
133. वही, पृष्ठ संख्या 600
134. वही, पृष्ठ संख्या 593
135. वही, पृष्ठ संख्या 613
137. वही, पृष्ठ संख्या 612
138. वही, पृष्ठ संख्या 606
139. वही, पृष्ठ संख्या 581
140. वही, पृष्ठ संख्या 573
141. वही, पृष्ठ संख्या 600

142. वही, पृष्ठ संख्या 593
143. वही, पृष्ठ संख्या 602
145. वही, पृष्ठ संख्या 600
146. वही, पृष्ठ संख्या 600
147. वही, पृष्ठ संख्या 598
148. वही, पृष्ठ संख्या 594
149. वही, पृष्ठ संख्या 600
150. वही, पृष्ठ संख्या 602
151. वही, पृष्ठ संख्या 607
153. वही, पृष्ठ संख्या 608
154. वही, पृष्ठ संख्या 614
156. वही, पृष्ठ संख्या 600
157. वही, पृष्ठ संख्या 571
158. वही, पृष्ठ संख्या 594
159. वही, पृष्ठ संख्या 608
160. वही, पृष्ठ संख्या 571
161. वही, पृष्ठ संख्या 585
162. वही, पृष्ठ संख्या 615
164. वही, पृष्ठ संख्या
165. वही, पृष्ठ संख्या 614
167. वही, पृष्ठ संख्या 614
168. वही, पृष्ठ संख्या 595
169. वही, पृष्ठ संख्या 608
170. वही, पृष्ठ संख्या 579
171. वही, पृष्ठ संख्या 598
172. वही, पृष्ठ संख्या 602
173. वही, पृष्ठ संख्या 578
174. वही, पृष्ठ संख्या 571
175. वही, पृष्ठ संख्या 602
176. वही, पृष्ठ संख्या 602
177. वही, पृष्ठ संख्या 606
178. वही, पृष्ठ संख्या 585
179. वही, पृष्ठ संख्या 603
180. वही, पृष्ठ संख्या 601
181. वही, पृष्ठ संख्या 578
182. वही, पृष्ठ संख्या 597
183. वही, पृष्ठ संख्या 571
184. वही, पृष्ठ संख्या 583
185. वही, पृष्ठ संख्या 578
186. वही, पृष्ठ संख्या 602
187. वही, पृष्ठ संख्या 596
189. वही, पृष्ठ संख्या 581
190. वही, पृष्ठ संख्या 606
191. वही, पृष्ठ संख्या 601
192. वही, पृष्ठ संख्या 610
193. वही, पृष्ठ संख्या 581
194. वही, पृष्ठ संख्या 585

195. वही, पृष्ठ संख्या 608
196. वही, पृष्ठ संख्या 601
197. वही, पृष्ठ संख्या 610
198. वही, पृष्ठ संख्या 601
199. वही, पृष्ठ संख्या 598
200. वही, पृष्ठ संख्या 600
201. वही, पृष्ठ संख्या 610
202. वही, पृष्ठ संख्या 598
205. वही, पृष्ठ संख्या 608
206. वही, पृष्ठ संख्या 612
207. वही, पृष्ठ संख्या 601
208. वही, पृष्ठ संख्या 608
209. वही, पृष्ठ संख्या 571
210. वही, पृष्ठ संख्या 594
211. वही, पृष्ठ संख्या 600
213. वही, पृष्ठ संख्या 600
214. वही, पृष्ठ संख्या 584
215. वही, पृष्ठ संख्या 607
216. वही, पृष्ठ संख्या 591
217. वही, पृष्ठ संख्या 579
218. वही, पृष्ठ संख्या 594
220. वही, पृष्ठ संख्या 600
221. वही, पृष्ठ संख्या 591
222. वही, पृष्ठ संख्या 600
223. वही, पृष्ठ संख्या 615
224. वही, पृष्ठ संख्या 608
225. वही, पृष्ठ संख्या 595
226. वही, पृष्ठ संख्या 598
227. वही, पृष्ठ संख्या 602
228. वही, पृष्ठ संख्या 600
229. वही, पृष्ठ संख्या 601
230. वही, पृष्ठ संख्या 607
231. वही, पृष्ठ संख्या 600
232. वही, पृष्ठ संख्या 607
233. वही, पृष्ठ संख्या 600
234. वही, पृष्ठ संख्या 613
235. वही, पृष्ठ संख्या 576
236. वही, पृष्ठ संख्या 605
237. वही, पृष्ठ संख्या 600
238. वही, पृष्ठ संख्या 605
239. वही, पृष्ठ संख्या 580
240. वही, पृष्ठ संख्या 593
241. वही, पृष्ठ संख्या 610
242. वही, पृष्ठ संख्या 571
243. वही, पृष्ठ संख्या 581
244. वही, पृष्ठ संख्या 603
245. वही, पृष्ठ संख्या 580

246. वही, पृष्ठ संख्या 602
247. वही, पृष्ठ संख्या 601
248. वही, पृष्ठ संख्या 601
249. वही, पृष्ठ संख्या 571
250. वही, पृष्ठ संख्या 600
251. वही, पृष्ठ संख्या 601
253. वही, पृष्ठ संख्या 600
255. वही, पृष्ठ संख्या 693
256. वही, पृष्ठ संख्या 594
258. वही, पृष्ठ संख्या 598
259. वही, पृष्ठ संख्या 593
260. वही, पृष्ठ संख्या 601
261. वही, पृष्ठ संख्या 606
262. वही, पृष्ठ संख्या 601
263. वही, पृष्ठ संख्या 602
264. वही, पृष्ठ संख्या 602
265. वही, पृष्ठ संख्या 601
266. वही, पृष्ठ संख्या 574
268. वही, पृष्ठ संख्या 601
269. वही, पृष्ठ संख्या 601
270. वही, पृष्ठ संख्या 578
271. वही, पृष्ठ संख्या 574
272. वही, पृष्ठ संख्या 594
274. वही, पृष्ठ संख्या 594
275. वही, पृष्ठ संख्या 595
277. वही, पृष्ठ संख्या 602
278. वही, पृष्ठ संख्या 600
279. वही, पृष्ठ संख्या 601
280. वही, पृष्ठ संख्या 601
281. वही, पृष्ठ संख्या 600
282. वही, पृष्ठ संख्या 598
284. वही, पृष्ठ संख्या 613
285. वही, पृष्ठ संख्या 581
286. वही, पृष्ठ संख्या 576
287. वही, पृष्ठ संख्या 600
288. वही, पृष्ठ संख्या 583
289. वही, पृष्ठ संख्या 602
289. वही, पृष्ठ संख्या 614
A
290. वही, पृष्ठ संख्या 594
291. वही, पृष्ठ संख्या 610
292. वही, पृष्ठ संख्या 602
293. वही, पृष्ठ संख्या 610
294. वही, पृष्ठ संख्या 574
295. वही, पृष्ठ संख्या 602
296. वही, पृष्ठ संख्या 581
297. वही, पृष्ठ संख्या 594

298. वही, पृष्ठ संख्या 602
299. वही, पृष्ठ संख्या
301. वही, पृष्ठ संख्या 592
302. वही, पृष्ठ संख्या 583
304. वही, पृष्ठ संख्या 605
305. वही, पृष्ठ संख्या 571
306. वही, पृष्ठ संख्या 607
307. वही, पृष्ठ संख्या 606
308. वही, पृष्ठ संख्या 601
309. वही, पृष्ठ संख्या 601
310. वही, पृष्ठ संख्या 601
311. वही, पृष्ठ संख्या 605
312. वही, पृष्ठ संख्या 600
313. वही, पृष्ठ संख्या 601
316. वही, पृष्ठ संख्या 600
317. वही, पृष्ठ संख्या 602
318. वही, पृष्ठ संख्या 581
319. वही, पृष्ठ संख्या 594
320. वही, पृष्ठ संख्या 594
321. वही, पृष्ठ संख्या 581
322. वही, पृष्ठ संख्या 601
323. वही, पृष्ठ संख्या 598
324. वही, पृष्ठ संख्या 598
325. वही, पृष्ठ संख्या 608
326. वही, पृष्ठ संख्या 601
327. वही, पृष्ठ संख्या 600
328. वही, पृष्ठ संख्या 614
329. वही, पृष्ठ संख्या 600
330. वही, पृष्ठ संख्या 600
331. वही, पृष्ठ संख्या 601
332. वही, पृष्ठ संख्या 601
333. वही, पृष्ठ संख्या 615
334. वही, पृष्ठ संख्या 602
335. वही, पृष्ठ संख्या 615
336. वही, पृष्ठ संख्या 575
337. वही, पृष्ठ संख्या 594
338. वही, पृष्ठ संख्या 594
340. वही, पृष्ठ संख्या 594
341. वही, पृष्ठ संख्या 583
342. वही, पृष्ठ संख्या 602
343. वही, पृष्ठ संख्या 607
344. वही, पृष्ठ संख्या 606
345. वही, पृष्ठ संख्या 571
346. वही, पृष्ठ संख्या 583
347. वही, पृष्ठ संख्या 601
348. वही, पृष्ठ संख्या 608
349. वही, पृष्ठ संख्या 602

350. वही, पृष्ठ संख्या 601
351. वही, पृष्ठ संख्या 593
352. वही, पृष्ठ संख्या 575
353. वही, पृष्ठ संख्या 601
354. वही, पृष्ठ संख्या 606
355. वही, पृष्ठ संख्या 575
356. वही, पृष्ठ संख्या 583
357. वही, पृष्ठ संख्या 600
360. वही, पृष्ठ संख्या 607
361. वही, पृष्ठ संख्या 578
362. वही, पृष्ठ संख्या 602
363. वही, पृष्ठ संख्या 594
365. वही, पृष्ठ संख्या 601
366. वही, पृष्ठ संख्या 571
367. वही, पृष्ठ संख्या 571
368. वही, पृष्ठ संख्या 571
369. वही, पृष्ठ संख्या 612
370. वही, पृष्ठ संख्या 601
372. वही, पृष्ठ संख्या 602
373. वही, पृष्ठ संख्या 591
374. वही, पृष्ठ संख्या 593
375. वही, पृष्ठ संख्या 601
376. वही, पृष्ठ संख्या 602
377. वही, पृष्ठ संख्या 608
379. वही, पृष्ठ संख्या 602
380. वही, पृष्ठ संख्या 594
381. वही, पृष्ठ संख्या 594
382. वही, पृष्ठ संख्या 571
383. वही, पृष्ठ संख्या 602
384. वही, पृष्ठ संख्या 594
385. वही, पृष्ठ संख्या 613
386. वही, पृष्ठ संख्या 585
387. वही, पृष्ठ संख्या 581
390. वही, पृष्ठ संख्या 600
391. वही, पृष्ठ संख्या 601
392. वही, पृष्ठ संख्या 594
393. वही, पृष्ठ संख्या 598
394. वही, पृष्ठ संख्या 600
395. वही, पृष्ठ संख्या 583
397. वही, पृष्ठ संख्या 600
398. वही, पृष्ठ संख्या 578
400. वही, पृष्ठ संख्या 600
401. वही, पृष्ठ संख्या 581
402. वही, पृष्ठ संख्या 601
403. वही, पृष्ठ संख्या 600
404. वही, पृष्ठ संख्या 598
405. वही, पृष्ठ संख्या 600

406. वही, पृष्ठ संख्या 571
407. वही, पृष्ठ संख्या 601
408. वही, पृष्ठ संख्या 606
409. वही, पृष्ठ संख्या 594
411. वही, पृष्ठ संख्या 598
413. वही, पृष्ठ संख्या 601
414. वही, पृष्ठ संख्या 581
415. वही, पृष्ठ संख्या 601
416. वही, पृष्ठ संख्या 581
417. वही, पृष्ठ संख्या 600
418. वही, पृष्ठ संख्या 598
419. वही, पृष्ठ संख्या 606
420. वही, पृष्ठ संख्या 601
421. वही, पृष्ठ संख्या 601
422. वही, पृष्ठ संख्या 601
423. वही, पृष्ठ संख्या 598
424. वही, पृष्ठ संख्या 581
425. वही, पृष्ठ संख्या 602
426. वही, पृष्ठ संख्या 589
427. वही, पृष्ठ संख्या 571
428. वही, पृष्ठ संख्या 571
430. वही, पृष्ठ संख्या 606
431. वही, पृष्ठ संख्या 602
432. वही, पृष्ठ संख्या 602
433. वही, पृष्ठ संख्या 612
437. वही, पृष्ठ संख्या 612
440. वही, पृष्ठ संख्या 592
441. वही, पृष्ठ संख्या 601
442. वही, पृष्ठ संख्या 614
443. वही, पृष्ठ संख्या 600